



150

आम आर

150

आम आर

श्री-१

मि१
१ छैनमः श्रीवज्रसत्ताय ॥ ३ ॥ विहरति कनकादौ. आकसिंहो मुनिन्दोऽप्यत्रितस्रसंघः सद्यमानोऽनुनाथः ॥ कूवलः
यदलनशालक (संयुक्तगणः) ॥ सारवधितटस्कः सर्वलाकहितस्कः ॥ यदवाः सति मन्त्रो वज्रकनकमयं मदिनं यत्रय
कायातालं यदुज्जगं स्तुनिमलिकिन (संयुक्तसर्वधकावाः) ॥ केवाः स्त्रीविलाखी प्रमृदिददया यत्रविद्याधनं दास
माकृद्वावहृतं मुनिववचनं ॥ अमुमायानि सर्वं ॥ ॥ गन्धर्वमण्डला यं सत्रविनललितं वा सनं यत्रमक्तिदि
शेदवदताये ववकूचकलसंशयिमानाः श्यावारिः ॥ हतायसागवांत मलयगीत्रितं यत्रविद्याधवाद्या रुमाकः

छावहृतं मुनिववचनं ॥ अमुमायानि सर्वं ॥ ॥ वृक्षं द्यादिव नूपाः समसखनिवताः सप्रसाः शुद्धनूपाः यद्वा
अदित्यवर्गः ॥ सवनवगवृक्षाः नाकसाः किन्नवंदाः गधर्वादिप्रमूखाः प्रमृदितरुदयाः सिद्धविद्याधनं दाः गम्भि
वादावधर्मप्रमृदितमनसाः ॥ अमुमायानि सर्वं ॥ ॥ मन्दावर्गः कूवलवम्यकनागपूष्पगन्धर्वमेवगुवचन
नकूकमाद्यैः नलोत्तमैः कनेकवागनिवद्धकायाः आयाकियूयनिवताः ध्रुववधयधर्मेनी ॥ ॥ आयाकिदेवकु
जंगलः सवनकिन्नवंदाः कादयः प्रववधर्मकृताधिकावाः ॥ ॥ वीरवचः प्रसमसोखानिमिरुहृतमतत्य

काशितमिरुष्टवत्प्रयधर्मा॥

शटेवपि॥

॥यइर्लरी॥

कल्याणार्तेननेकेऽमानूयमष्टा

कनदायमूर्क

तत्साम्यर्तयाफमतातवसि

कार्यादि

धर्मप्रवत्प्रययत्नः॥

॥अस्मिन्नलाघकनलात्मकार्ण

निर्वानमा

र्णमदणकार्ण

सइर्लरी

जन्मगथाग

तानांमतादिधर्मप्रवत्प्रयसिद्धि॥

॥आयाता

श्रुतकामा

असूत्रसूत्रनवा

शिद्धगन्धर्वनाग

श्रुतकामा

किन्नवन्दागनूठरुविहवा

शकवक्त्रादि

देवाऽपूजाय

वक्ष्यतावे

मिरुवत्प्रयनमिताम

दनिइ

ल्लरायर्ल

कार्णवाव

यामिपरामितशिनसार्त

महाज्ञानसूत्र

नभावृद्धाय

॥नमाधर्माय

॥नमासंघाय

॥नमः॥

॥पुरी॥

॥पुरी॥

॥पुरी॥

॥पुरी॥

॥पुरी॥

॥पुरी॥

श्री२

श्री२

अज्ञानमार्ग

150

यत् स्थानि प्रावर्षिद्या निरुपुया निपुवा दयसु धर्मवर्षा मिहि सा सुम ॥ सा सुसा कश्चा गोसु लाव दान् रावन नदिसुवनः
समत्या गगावरुदुध जाय अश्वत्था वृषा निपुया निपुया ॥ का विना अश्वत्था ॥ सुसुखः भवति निपुया निपुया ॥ उमका अश्वत्था ॥ त्यगः
यसु रक्त विक्कि विक्कि अश्वत्था निपुया निपुया ॥ निपुया निपुया ॥ निपुया निपुया ॥ निपुया निपुया ॥ निपुया निपुया ॥
वरुदुध अश्वत्था निपुया निपुया ॥ निपुया निपुया ॥ निपुया निपुया ॥ निपुया निपुया ॥ निपुया निपुया ॥ निपुया निपुया ॥
या वरुदुधः विक्कि निपुया निपुया ॥ निपुया निपुया ॥ निपुया निपुया ॥ निपुया निपुया ॥ निपुया निपुया ॥ निपुया निपुया ॥
यथा फावरुदुधः कथमनदमि ॥ सुसुखः भवति निपुया निपुया ॥ निपुया निपुया ॥ निपुया निपुया ॥ निपुया निपुया ॥ निपुया निपुया ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
कस्मिन्नेन यमानः ॥ निपुया निपुया ॥ निपुया निपुया ॥ निपुया निपुया ॥ निपुया निपुया ॥ निपुया निपुया ॥
नदुदुध रक्तः ॥ निपुया निपुया ॥ निपुया निपुया ॥ निपुया निपुया ॥ निपुया निपुया ॥ निपुया निपुया ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
जायते यमानः ॥ निपुया निपुया ॥ निपुया निपुया ॥ निपुया निपुया ॥ निपुया निपुया ॥ निपुया निपुया ॥
हि ॥ निपुया निपुया ॥ निपुया निपुया ॥ निपुया निपुया ॥ निपुया निपुया ॥ निपुया निपुया ॥ निपुया निपुया ॥

गावद्वन्द्वनरावनकमावयावावयावयावदवराः सन्निपतिगाः॥यावेनागयक्रगधर्वासत्रगत्रुकिन्नत्रादावग
इनका निववाधिसलकाटिनियगभगसहमानिगसिनत्रवित्रकगुवाधिसलस्यगदसमागगायासनरथयगवागगाः
सर्वायगिष्टयवदारगवग४ अक्षमनयाय पुमाचानिर्दभगथाहित्रराय॥अतोअर्धवसेभक्षनगमयिष्टविद्रहिः नकुर्भ
क्षमनयाय४ भक्षगमयिष्टकेनविग॥समर्पवमाचनिकत्याभर्षवसंख्याया नकुभक्षमनयायः भर्षगमयिष्टकविः
ग॥याः कविचिद्विद्विः सन्निपावकः यत्रमानव४॥भर्षगमयिष्टसर्वाविष्टययजिनस्यर्ध॥आकाभयदिवाकभिविद्रुय
विष्टकविगं नकुभक्षमनयाय४ भक्षगमयिष्टकेविगं॥अगकनिवकल्यानिकल्याकाटिभगानिन्व॥अविष्टकसर्वद्वः सख्यागा

नदिसलगा॥यस्माद्वगुकावज्ञगसगयेवक्षेत्रपुण्यावित्रग४ पापदिसयावददुरुर्कगजनयस्मात्समदात्मस्यआय४
सख्यानसलगा॥अगकनिवकल्यानिर्सेख्यायावगयेवरा॥गसमिष्टिसमयसादिमाकिचित्कवर्षभयं नतिनृणाय४पर्यन्त
कयित्सख्यायसलगा॥अथस्वसूगसिन्धयगयवदिआराययाकवनपाफाः४ कश्चिन्वानामआस्रध्वा४ नर्कवायससदसे
साद्वरगवग४ युजाकर्मकल्यानयागगस्यमस्यविमिर्वातभर्षप्रत्यासदसात्मयएगवगअत्रयानियमएगवकमवमाद
सयकिसरगवानसर्वसुत्तानर्कयकासदाकावृत्तिकदिर्ग॥वासर्वसुत्तानामापापिष्टरगक्षसमसमरुतअत्रुवयासाकेक
गामदायप्रह्लादानसूयसमसग४पदिस्वसर्वसुत्तानीयाद्रुसंलसन्ध्यामिष्टकववददिएगवाकुष्टाद्वाराग॥अथद्वद्वः

[illegible]

यथैयनमस्ताः क्रियमर्थेदिदं भाष्यं पुनि साहेना एविष्णि ॥ त्वं किं तस्य सित्तविदुमात्रसर्वपरु समाधु भागुं कथा गग
 ल्यादिभिः ॥ भागुकन कुनि क्रियावदिनस्य सर्वसत्ता नीपेद भाष्यं भव साहं नीदुर्गं ॥ १ ॥ यथैयनमस्ताः क्रियमर्थेदिदं
 द्युः ॥ यथैयनमस्ताः क्रियमर्थेदिदं भाष्यं भव साहं नीदुर्गं ॥ १ ॥ यथैयनमस्ताः क्रियमर्थेदिदं भाष्यं भव साहं नीदुर्गं ॥ १ ॥
 गीमयायागो द्युः ॥ यथैयनमस्ताः क्रियमर्थेदिदं भाष्यं भव साहं नीदुर्गं ॥ १ ॥ यथैयनमस्ताः क्रियमर्थेदिदं भाष्यं भव साहं नीदुर्गं ॥ १ ॥
 मउत्तिगदासर्वप्रमाणयद्यकं भाष्यं एविष्णि ॥ यदाकदुयः ॥ सामान्यार्थैर्वै ॥ सूरगाहवर्गः ॥ दमनभीगरं ॥ वलुगदा ॥
 कुएविष्णि ॥ यदासमकपायनामप्यसम्भो एवम् ॥ १ ॥ १३८ ॥ भाष्यपुनस्तत्रवगदा ॥ कुएविष्णि ॥ यदागो भूमादाः

[illegible][illegible]

८ समानगाधमिदमनागमामनसमंगिसा ॥ अत्र समप्रमादकस्यावाप्तिश्च यत्नमात्रं नृणां सिद्धिः ८
यातिमरुमसार्धयनगृहकृद्वै ८ यद्येता आयेन एगवाकनापसिक नउपसंक मएगव नकेपादो मित्रसो वदित्वा एगः
तुंनपियेदक्रितीकृतेकनच्यवीदगत्रकननिवर्ह शाखयप्रवसुविचकपुवाधिसत्वा येन एगवाकनी उं सिपुममयाः
एवगा ८ सापानकवइ इह मय नदमनागमया ३ अगासा उवाच ॥ ८ ॥ ८ ॥ गिसुवर्षय एसा रुमी सुपुत्र वा अ एपुपविचकः
नामवगीया ॥ ३ ॥ अत्रकवापमंगिदिगेन एगवाकवगीमया इहिरुचि वा दक समककनकपुलाकना नै ऊथसूर्य
समकनविवावगे ॥ एगसिगादभादि एह ८ समंनगशा निषर्हिलेक के धवैर्य वपरासवा ॥ अनेकभगसदृसाः

यीपनिषदायीप्रवसुगशा दृष्टं वा अचयया रुनकर इहिरा ॥ ननाकावासा ना या ८ ॥ सा अका न्निभवा सुवर्ष पुरासा
कमइइ रुनमाम्यकु ३ ८ सासिसदम साके ॥ अया यइ ८ सा यमसी के ३ ८ सा दा विदइ ८ सा ल से द सा के अनेन वइ इहिरा
वेनादि मस्यकु सव्यसना नि सा के ॥ समनेमत्वा दृदया रुगाय अगे था गया ॥ मकययाम मी न्द ॥ ये ये ये वी ये र्दु वये ये ८
सैसा वेसै ॥ यथेयस वी ये ग्वा पयन ८ सा वेसवै म दाम नी न्द ८ गार्थवरा कु गु दसा गवा ॥ समाधि वा ॥ गी गु ने वयमा
॥ अनेन वइ इहिरा वनादि नारवने वअस वसवै सत्वा ८ ॥ अरु कु वद्वत्तव वा र्गवा ॥ अथ वरुयकु गु धमीवर्क ॥ मिठकु क
त्यानि अविनेया निदमकु धर्म उ मगादिगाय ॥ रुनकु के आलि धामकु ३ ८ वसमसु वा गीग वदावमा र्द ॥ यस्तु गे ठक अयाः

यस्तु श्री आदीकर्मपुत्राणि गिगा ४८ चक्रुः ३३ रिरीयवादिना नमास्तु दृष्टयव वास्तु नु जागिस वा ४८ सत्व हव नु सर्वः
 जागिस वा जागिसुस्तु का ४० अ नु समर्प न ४८ गी म नी दु म् चक्रुः गी व न नी दु य वी ॥ अ न न व ३३ रिरीया व नादिना सत् न के दृष्ट
 रि सु दा स मा गी मी ॥ वि व र्ज य नु स स पा य क र्म व नु क म लानि गृ ह्ण किये यि ॥ न मा स वा मा म पि स र्वा नि नी या व नु गी द म न या
 य ना य ॥ अ न न व ३३ रिरीया व नादिना ग सा र्धि ग र्ध प वि प र य यी ॥ य धा व न क उ प व न स त्वा अ दी क र्म पु त्रा नि गि गा ४॥ नि स्तीः
 र्क आ का श य वि रु म नि की य न र वि यो पि स वा म ना ४ ॥ य ३ ४ स्य स त्वा य उ म श्व या वा न व क र्म म न स सा क ॥ अ न न व ३३ रिरी
 या व नादिना स र्वा व गी य म म क ३ ४ खा ४ ॥ नि स्तु म म य वि ज नी म म न च क गानि व गाने मी र य व म न ह्म र्म ॥ स म त्वा रु न नु

१०

मीरु द्वा ४ क या क न च य ग म ॥ अ न य य मी र दं क ३ द म दि क्क य व रि ना ४ ॥ य उ म या य क र्म क र्म य र्वा द न नी ॥ ग त्वा र्ध द म यि य मिः
 रि ना र्ध द म व ल ग व ४ ॥ मा गा पि रु न व ह्म ना द्वा ना म पु ज्ञा न ना ॥ क म री या व र्ज न य स पा यी स र्वा ग म या ॥ ३ अ र्थ म द म क
 न क ल य म द न व ॥ ग न्ध म द म क न य पा यी क म म या ॥ ३ अ नि र्ग र्द न क र्म न ३ स ग ना पि क र्म ना ॥ अ ना द न व दृ ष न य य पा यी
 क री म या ॥ वा ल द्वा द्वा पु वा स न म ह्म ना र्ग र्ग म सा ॥ पा य मि उ व अ र्थ व क म या क ल य ग सा ॥ की ज व मि व अ र्थ व अ क नाः
 ग व ह्म ना ॥ अ र्क ध न दा ष म य य पा यी म या ॥ अ न र्थ अ न र्म र्ग दी र्था मा त्म र्थ र्क ना ॥ ३ अ द्वा वि द दा ष म य य पा यी
 ४ क ग म या ॥ अ म ना ग म क र्म र्म क मा नी र य र्क ना ॥ अ न र्थ ग र्ग ना पि य य पा यी क ग म या ॥ य स रि क व ल नः

वक्रमकोधवभूया इति नियासादिगनापियययायैकमयाः यानार्थरुज नार्थयवस्तु यस्मिन् यदनुनाः विविधक भर्तृगार्थः
 ययपायैकमया ॥ कर्त्तव्यवत्तनसंनयैभगुवविग ॥ यत्कगमाह भर्तृगनसर्वद भयाम्यद ॥ यत्कद्वद्वधर्मयः
 वदसगर्थव ॥ अतोवदकगीसादिगत्सर्वद भयाम्यद ॥ यत्क न्यायकद्वधर्मयः विसलसययूनश अतोवदकगीसा
 दिगत्सर्वद भयाम्यद ॥ सर्वमपिगिक ४ साय जानमसदा रमागोपि ७ वतोवदगीसर्वद भयाम्यद ॥ मयत्त नापि वास्तव ॥
 तानदया वगनवत्तनसर्वद भयाम्यद ॥ यत्कयित्वाय भदिक साकय भवसाजिना ॥ ३ वविद्याम्यद
 सत्वा सर्व ३ ४ साद भदिनि ॥ सुययिषाद भरुम्यो सर्व सत्वा नयिनियान ॥ द भरुमो सिदित्वा वसर्वद भगवत्तन ३ ४

कस्यदिसत्त्वसावययैकलकटिया इयावद्वद्वदिगत्सर्वमादि ३ ४ सागगा ॥ गवीसत्तानद भर्तृगमी यो द भना
 मिमीसुवर्धुपुलासाकमानासर्वकर्मकयकवी ॥ यनकत्तसर्वद भगवत्तन ॥ ३ ४ वत्तनपुका भरुसर्वद्वजरीक
 य ॥ द भयिषा ७ मीसुवर्धुपुलासाकमी ॥ य भद्वनि भुली गवीसायुयायसंकर्य ॥ सासासिद भरुमो गंद भर्तृगपव
 वा आलासयैद्व ७ मीसुवर्धुपुलासाकमी ॥ ग वसमदो वी गरी वी वत्तन ॥ अयिनेयैद्व ७ मीसुवर्धुपुलासाकमी ॥
 पाधि भगवत्तन भवतिरिविनेयैः ७ मीसुवर्धुपुलासाकमी ॥ यत्कयित्वाय भदिक साकय भवसाजिना ॥ ३ वविद्याम्यद
 सा ७ मीसुवर्धुपुलासाकमी ॥ यत्कयित्वाय भदिक साकय भवसाजिना ॥ ३ वविद्याम्यद

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

यदिनीलिशासुसुविषमार्गे ननु गस लुगुः ॥ नैव नानं रगये वसं ॥ धनं दिव न्यमनिमकि रत्नं ॥ स्वर्गं वदुर्ध्वं विविक्तं त्वं
माइ ४४ मया कवि सा के लंउः सायिक सत्तयुगिक वदमी ॥ सर्वे रग लुगु उदात्र व द्धु ४४ एं कया लुगु यनं नन ॥ या कायितं पकि
मनसा श्री कः साग स लुगु मनसा यपनि ॥ स श्री रेण या ४४ सा रगेण मार्गे ४४ न्यन र्वन यवि ययं ॥ गध क्क मा यं वदुर्ध्वं नैव नं रः ॥
मंद व द्धु क्क स मं व द्धु ॥ पिक स व क्क दि य व व यनुः ॥ क्क क्क ग स व र वं क्क यं ॥ क्क क्क य जा द म स दि सा सः ॥ अवि नि या स व र
अगगनां ॥ स वी धि स लान वि अ व कानां ॥ धर्म स वा धि य गि स मि ग स ॥ ना प्रा ग गिं स वी दे व क्क यनुः ॥ र वं क्क अ क्क गि कं वि वि क
रु ॥ आ सा द यं क्क जि न वा ज म किं ॥ र वं क्क व द्धु दि स दा स मा ग मं ॥ उ व ४४ क्क यं ना दि र वं क्क नि यः ॥ य र्ग व न ध न्य स म द्धु का वा ४॥ न्य न

वरुनयः प्रयोक्तव्यः समवन्तः कालाकुञ्जककल्याणः ॥ सदास्मिन्निमित्तप्रकारेण कुः सदाभ्यप्यत्राभ्यविपत्तिगाम्यसर्वविशेषः ॥
 वरुनयः प्रयोक्तव्यः समवन्तः कालाकुञ्जककल्याणः ॥ यथाभ्यप्यत्राभ्यविपत्तिगाम्यसर्वविशेषः ॥
 निषिद्धः प्रयोक्तव्यः समवन्तः कालाकुञ्जककल्याणः ॥ यथाभ्यप्यत्राभ्यविपत्तिगाम्यसर्वविशेषः ॥
 यथाभ्यप्यत्राभ्यविपत्तिगाम्यसर्वविशेषः ॥ यथाभ्यप्यत्राभ्यविपत्तिगाम्यसर्वविशेषः ॥
 यथाभ्यप्यत्राभ्यविपत्तिगाम्यसर्वविशेषः ॥ यथाभ्यप्यत्राभ्यविपत्तिगाम्यसर्वविशेषः ॥
 यथाभ्यप्यत्राभ्यविपत्तिगाम्यसर्वविशेषः ॥ यथाभ्यप्यत्राभ्यविपत्तिगाम्यसर्वविशेषः ॥

न भमस्यो न गलासु वनिषां । अथ च वागविभि ह नाभगं । ए३ क स च जिनां भमगं ॥ नृक भम क ग वास सु स्वाग्रं वात्र सु वाप
 यद किं च य किं नो वनिषां क स च ३ स जागं नीव विवा जिग मो व सु ग्रीवं ॥ जाग समान ए ला भिग गायं व जिग स चिद भदि भि ला
 क । ३४ इव म नृ य भम यि ला कं । सर्व सु च न च गार्थि ग स त्वं ॥ न व क ग मिष य मि र्थ ग्र मिष । ए ग सु वास व म नृ ज ग मिष व व स र्व स
 र्थार्थि ग स त्वं । सर्व य भम नृ य ग ग मिष ॥ व र्ण सु व र्ण क न क नि ला सः कां व न ग क य ला भिग गाय । सो म भ भं क सु वि म व व कं ॥ ३५
 वि का भिग वा जिग सु वि म व व कं ॥ ग व न व लां ग क म व ग म । सि र्थ मि वा क म यि क म ना गं । स ति ग र्थ ला वां वे ग वा कं । मा नृ य वि
 ग म व व गं व ॥ वा म य ला क व मं । वि ग व मि र्थ स र्थ मि व व व यं । निर्म व ग म व व र्थ मि नि डं । सर्व य ला भिग क म न कं ॥ ३६ नि

[illegible]

नयके॥ सर्वसदवक्रताकस्तुम्भश्चरुगवाग्रुवजस्यर्क्षं। यत्रं न दमनमस्तुमांशुः नेववत्रकप्रमासगगानां॥ यस्मिन्
मस्तुगेमजिनसर्वः कथनवाच्यसंनमनेनपमयसविगद्यरुवाग्रं। गिनवसत्तलुजिनत्वं॥ अयंस्तुवित्वनवयगिद्व
अयंस्तुगिन्वयपमिभनः यत्रवक्रगदिमस्तुर्वेगः जागिभ्रनागगदमननाः। वीहभरुवीयन्धमिसयः वीहभदभनग
वभ्रमांमे। वीहभजिनस्तुगिमकलाकनः जाजागामिदजागिद्वगगलरयं॥ देद्वप्रमांमेन। नमस्तुवायपियदत्तलकत्त १२
सुदुमेशश्चमभ्रयवद्वस्युगगायिः गद्वदभयिदिवसंगगायि॥ इहवसमद्विमाययिस्तुवायवारेययियास
मिगादिशायाधिमनरुवायभ्रलरयः कृपवगममभ्रसयथा॥ रुवीपुदानविवाकनरुवनः सर्वजिनानवसस्तुगिरुगे॥ संम

[illegible]

सर्वजनः कायप्रणामरविशङ्कितमयः पञ्चप्रणामविशङ्कितमयः सर्वशिलाकविभिद्वययः ॥ यच्चवसनसमन्वितमयः ॥
समदुःखप्रयिगायः सर्वसुखयसागवकः सनागगकृत्यकाधिरययः ॥ यच्चयुष्मककाटिगगायः ॥ यच्चयुष्मककाटिगगायः ॥
साकः सर्वशिलाकविभिद्वययः सनागगसर्वशिलाकविभिद्वययः ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥
सर्वशिलाकविभिद्वययः सनागगसर्वशिलाकविभिद्वययः ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥
यच्चयुष्मककाटिगगायः ॥ यच्चयुष्मककाटिगगायः ॥ यच्चयुष्मककाटिगगायः ॥ यच्चयुष्मककाटिगगायः ॥ यच्चयुष्मककाटिगगायः ॥
नमः सर्वशिलाकविभिद्वययः सनागगसर्वशिलाकविभिद्वययः ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

न काव च यथा दयायां युकासिंसे यत्तु मग्नः यथा हि जाननिदि स र्वसत्त्वाः। अयं च कायाय यत्तु न्यग्रामाः संश्रमयो वा
युमं द्विद्यानिग न्यग्रामानि वसंति स द्वानगवि जाननिय वस्य वना। यत्तु विदिय वयमगस्य अयानिः। अगद्वियं भव
यियाव केवा। द्यामद्वियं गभवि विरहात्री। डिहद्वियनि यत्र स द्व अयानि॥ कायद्वियं संगगा अयानिः। मनाद्विय धर्मादि
यान्नवा। धर्माद्विया नीगिय वस्य वनः। स्वक स्वक विषय मारि अयानि॥ विरुदि सायायमव च वयं। उद्वियं विषय विन
मंयाय यथ न जी धाव वि श्रु न्यग्राम संश्रमयो वा। रिह समाजिग न्यग्राम जानन गद्विय एव नामां। विरुयथा विषया विग
यान्न जानन गद्विय एव वं च। न्यग्राम यत्र यत्र गभ॥ न संश्रम न्यग्राम धर्मा सुव वं। विरुं च स र्व उ व उद्विय एव गभ

निविद्यवश्च नमनद्वियपिः संयविस्मयण षड्वियसंगं नवद्वियकुर्ये पुजानमात्मकं कवश्च निवद्य निवापन केय। असा
नक ४ ययय संर वाश्चः असा नकत्यसस्मि गन्धास्मि गकायस्तु ०० वशुचरासाभाक्रियमूज असोवे सानियथाशो नगमान
४स्मि गद नद अयजस्य नह यम दावि नृ द्या। यथेव आभीविष नृ कवमानिः अमु न गम वेद नृ विधानि। द्व उद्व गमिः
द्व यद्वस्तु गमिनीयः द्यया द्यया विभाविदितास्तु स र्व॥ न न्धकिं धे अमु अगमानि क्रि मू न ग म्भ म्भ वि सा न ग म्भ। ०० मोय द्यः
द्व क्रयर्गो वजकः न जा न ग म्भ निवमा नृ गो न ग म्भ॥ रु व न म्भु र् व क मार्ग नः यथे स म्भु द ज न म्भु म यं यथ स म्भु डादि
गान न जे न म्भु र् ल क मार्ग न् यथ स म्भु द ज समय म यं यथ म ही गान न जे न न का। यथ स म्भु न न क तु स्या यथे व य

[illegible]

नैद्युदात्री। अननयादेकमसनकर्ममत्तययद्वदिसदासमागमीवेयजययैखलपायकर्मवसयययानिभु
 लकवावाभिसर्वत्रकप्रवयाविनामवैवसाकाऽयममनुसाके॥यमवयिकसादियेभुगदीनाऽमसर्वयिकम
 सादियेरासांपरी।यव्याधिनाइवसुकीमगगानिभनरुगाधदभसुदिभसु।नसाविमखकुयव्याधिनासद्य
 सरुकुयावाग्यवसदियानि।कवाउयीवसमगाडिगवधयाफानानाविधैरयममवसन।ययनाऽमसत्ववासः २१
 नागकइऽद्विगादिसखकुगरयभगयीवीमामदभयगससुधावकांभाऽ।यसुविमीगगाभऽसुवसुयमीत्यसय।
 मिनीरिऽसुसुविमसारुमकुगसंशकु॥अनवपानकगयेववसु॥धनीरिदेवसुमनिमकिरुवमसुवसुवे३५

विविधवती॥मऽऽइयभऽककविताकलाकु।मारेकसत्वऽयगिकसुदभीसर्वयगलाकुददाववईऽयईकवाः
 लाकुयवसुवनासादयकुजिनवाअमकिरवेकुद्वदिसदासमागमी॥उवैऽकुलीनादिरवकुनिर्णयरुमधनभा
 न्यसमद्वकांभाऽवयचवसुनयभनकीयोसमसकगलाकुअनककत्यासवालेथानिभवकारवकुसुनाभवि
 यांनुगाभगसाविवाभयववकुनिमी॥ववकुवयावगासुवदु॥यभ्यकुद्वदभसुदिभसुयात्वाकमवकसुइवा
 यविद्वानावेरुयवलासनसनिषकुन॥भ्यकुधमभ्यभ्यमोनात्पायानिकमीनिमयाडिगानियवीजिगीयरु
 वसीकटकायपावकमीरेवगावरुभगेसर्विकीयकुवनिवकारिणकायिसस्यकिमनवसाकसामवराकुमनसाय

[illegible]

यमी ॥ ॥ अथ वा गविनिष्ठ नामा गीमृदु कर्मादिना सगरी न कर्म मकरासम आर्गः वाससु नामय दक्रि नवत
नी लनिगद स कुरु सजगः नी लवि वाडिगमा वसु गीग । जाग समान युग सिग मर्षः द्वादिगमर्षि द भदि भिगि लो क
इ ४ इव मन कय अक एि सार्क स वसु ख नव ग र्थिग मर्ष । नव क गगि व थरी र्थिगि व थग म् वासु वस नू जग र्थिग म् वः
मर्ष स र्था पिग मर्षः स व थ अक अर्था गगि व थ र्थ स व थ नू क न क निग म् का र्क न ग क पु र्ण सिग आ र्ग म् म् अर्क स विम स व
कः वि का गिग वाडिग म् विम स व द न । ग व म नू र्ग क म स ग र्थिग र्थिग वा क म ना ग । स लिग र्थ स या स विग वा दू मान
ग य विग म् स स ग व वाम पु र्ण क स म विग व मि स र्थ स र्थ मि व पु ग र्थ न । निम स अ व व र्थिग नी डी स व पु र्ण सिग

॥ दानविष्णुकरु सनसर्वज्ञिनानवर्षसुगिदगाशर्मसुखपञ्च आत्मनीर्द्व्याकन वीः सुद्रगसुखसुखयै ॥ य०० मेदात्र के
 द्योमसपणे केनकेन्द केनकेयलसर्वज्ञ इतिदात्र केगुरुसुखयैः वीधिमनरुत्रयाकन वीव ॥ यपियसुख अचन अना न्यामः
 व मावि होनयामनगगा ॥ गेवरु वय अनागगसर्वज्ञ नयवाय म भवहारि ॥ य०० स्वसमरु वसिकयक कर्मिर्वसुखसुख अकवक
 त्या ॥ कस्य अनागग वाधिवनयै ॥ यरुकक यई काटिगगा ॥ सुव सुयलसो कर्मद अनगाययापसु म द भावमुमई ॥ कर्मिसस २०
 द्यरु वया ॥ वाधियु होयु नत्रल्ययु म द अनसर्व सुयलसव सतपु म सुलामरु विष्णुमई ॥ वाधियुलामविष्णु म द भावमुमई ॥
 विमसज्ञानयुलामईवना ॥ काययुलामरु विष्णुमई ॥ यन्ययुलामविष्णु नगावसई वि साकविनिदरुवैय ॥ यन्यव नमस

सत्त्वितनिर्ग २० स्वसमउउ कात्रयिगा ॥ सर्वसुखसुख सागव कस्यमनागग वाधिव नयै ॥ यरुकक यई काटिगगा ॥ सुव
 सुयलसो कर्मद अनगाययापसु म द भावमुमई ॥ कर्मिससदुवया ॥ वाधियु होयु नत्रल्ययु म द अनसर्व सुयलसवः
 सनय म सुलामरु विष्णुमई ॥ वाधियुलामविष्णु म द भावमुमई ॥ विमसज्ञानयुलामईवना ॥ काययुलामरु विष्णुमई ॥ यन्ययुः
 लामविष्णु नगावसई वि साकविनिदरुवैय ॥ यन्यव नमसमत्त्वितनिर्ग २० स्वसमउउ कात्रयिगा ॥ सर्वसुखसुख सागवक
 स्यमनागग वाधिव नयै ॥ यरुकक यई काटिगगा याद म क उ विनिदरु वि साक ॥ सर्वज्ञिनानमन गेगु न नगाद म कः
 उमनकगु माकगगिमईमनागगसई ॥ ३० ॥ सुव सुयलसो कर्मद अनगाययापसु म द भावमुमई ॥ कर्मिससदुवया

क्रानामयेवमः॥ ॥ अथ सूर गवीरुसा वसायामिमं गथावगथा अनेकवस्तुषु अति सुवीर्यवान् पुन्यधर्मो॥
रासादिमस्तु यथाक्रमेण कथयामि ननु धर्मो॥ सत्त्वात्तु वदितुं विजानमानानेन मर्त्येण स्वस्वधर्मो॥ यथायुक्तं
इव गौतमनसैकयगाधेन ननु धर्मो॥ अन्ये त्रया येन यदुक्तिः अस्त्यनका त्रयस्य साधयार्थे येन केनचित् सूर उच्यते मर्त्य
यारिजानां केनैव सत्त्वाः अथैव कायाय यमं ननु अमः संजमये नोयमः ॥ इत्यादि नाना कथमनिवर्तमानं ननु धर्मो
नानेयवस्तु यथायुक्तं विदितुं यथायुक्तं धर्मो॥ अथैव कायाय यमं ननु अमः संजमये नोयमः ॥ इत्यादि नाना कथमनिवर्तमानं ननु धर्मो
नानेयवस्तु यथायुक्तं विदितुं यथायुक्तं धर्मो॥ अथैव कायाय यमं ननु अमः संजमये नोयमः ॥ इत्यादि नाना कथमनिवर्तमानं ननु धर्मो

मारे धर्मोः विदितुं सायाय यमं ननु अमः संजमये नोयमः ॥ इत्यादि नाना कथमनिवर्तमानं ननु धर्मो
जानने ॥ इत्यादि नाना कथमनिवर्तमानं ननु धर्मो
अनेकवस्तुषु अति सुवीर्यवान् पुन्यधर्मो॥
इत्यादि नाना कथमनिवर्तमानं ननु धर्मो
अथैव कायाय यमं ननु अमः संजमये नोयमः ॥ इत्यादि नाना कथमनिवर्तमानं ननु धर्मो
अथैव कायाय यमं ननु अमः संजमये नोयमः ॥ इत्यादि नाना कथमनिवर्तमानं ननु धर्मो
अथैव कायाय यमं ननु अमः संजमये नोयमः ॥ इत्यादि नाना कथमनिवर्तमानं ननु धर्मो
अथैव कायाय यमं ननु अमः संजमये नोयमः ॥ इत्यादि नाना कथमनिवर्तमानं ननु धर्मो

काययमीषयमासादुसोवयादोयविश्याडित्वा ॥ धनीयेनन्यमानिमूकिरुषधनयनाकुमीगीपेयएयलयासासुवृष्टेवे
 यविविश्वतलनिविदित्वायिमादुसायासवेवकनवनसगिगु॥ ४॥ सवेवेधनचावर्कुरुयित्वायगसवेकयोरुधन
 जायमी॥ ५॥ सुवोमिकवित्वाकुजावदाकायवदी॥ यिनकालगलेआयधनजममानिवा॥ सवेसत्यायिनकाहेनगरनेन
 वे॥ सवेगचायुमवर्कनरुहानजिसर॥ ॥ नकनयवकुरुसुहानकमसासन॥ ४॥ अनककलकाटिषनभकगनायिउ
 कायिगे॥ ॥ सुवृष्टेयुलसाकमसुगुवाजमनगायविदलानामसमः॥ ॥ ॥ अथरुवेगवसासवाजाः ॥ ५॥
 वादामसावाजाः विवृटकाससावाजाः विवृणकमसावाजउत्तरासनन॥ ॥ कीलनरीवनामियावरादकिमजानमकुल

निःविद्यायुगिसावयनरगवीरुनाउलियमसागवंकमगदवायग॥ अयैरगवीसुवृष्टेयुलसाकमसुगुवाज॥ ४॥ सवे
 गथागकलविग॥ ४॥ सवेगथागसत्यागग॥ ४॥ सवेवाधिसत्यगमनमसुग॥ ४॥ सवेदवयजिगे॥ ४॥ सवेदव
 सुवृष्टेयुलसाक॥ ४॥ सुविविश्ववर्कुरुयसीमिगे॥ ४॥ सवेदवराणाउलियमिगे॥ ४॥ सवेसत्यानीयवमसुगुवायके॥ ४॥ सवेनव
 कगिगेकयानियमसाक॥ ४॥ सवेसावक॥ ४॥ सवेरययुगिभमन॥ ४॥ सवेयववयुगिनीवर्कुरु॥ ४॥ सवेककाकाययममनावा
 धिकाकाययनामकानैसवेहानसवेयम॥ ४॥ यवमआकिकव॥ ४॥ कायासमनायिविधनानायववममयिगा॥ ४॥ यववम
 गसुसुयनासयिगा॥ ४॥ मसुगुदकरगवीगंसुवृष्टेयुलसाकमसुगुवाजसगवीरुसुगुवावकानीविमवमपवादिमः

युक्ताश्च मानसास्माकं यत्तु नृपस्य राजानीसर्वे सयसिवा नामाः नृपस्य धर्मोऽवहन धर्माः नृपस्य नवदिवा सखा वसन्ता
उत्साविद्यैर्यिष्ठांति ॥ अस्माकं कायवीर्यवत्सलस्य सज्जनिर्गुरुविष्ठांति नृपस्य धर्मोऽवहन धर्माः नृपस्य नवदिवा सखा वसन्ता
नित्यं यत्तु नृपस्य राजानीसर्वे सयसिवा नामाः नृपस्य धर्मोऽवहन धर्माः नृपस्य नवदिवा सखा वसन्ता
धर्मोऽवहन धर्माः नृपस्य नवदिवा सखा वसन्ता
सनायुगिरि वनके नृपस्य राजानीसर्वे सयसिवा नामाः नृपस्य धर्मोऽवहन धर्माः नृपस्य नवदिवा सखा वसन्ता
कयिष्ठांति नृपस्य राजानीसर्वे सयसिवा नामाः नृपस्य धर्मोऽवहन धर्माः नृपस्य नवदिवा सखा वसन्ता

[illegible]

[illegible][illegible]

गवा धाम हा वाजा विरू काम हा वाजा विरू पा काम हा वाजा सुसर्ग रग वं न म ग द यो र न ॥ ग न य र ग वं म नू
क वा ज न स सा ग म र न र वि ग वी नू भ व स न भ वि म न व वृ वि व व लु या र ग न नाना लं का वि र वि ग र वि ग वी ॥
आत्म न भ नी म ग व मा स प ह यी ग यः ग जा स न नि ष दि त्या वा ज म प म र न र वि ग वी न य वि वा हा र स य य य भ य वि ग वी
आ था मा न म द य य वि य वि ग न वि र ना यी सु व र्ण य ल शी क म ४ सु य न वा ज ४ आ ग य ४ ग स य ध म र ग स क स र वि का ३
व कि के आ रू स हा उ त्या द यि ग व्या हा ग न म न वा ज न ग सि का ल ग सि म न य म ग म दि सी वा ज य का इ दि ग व भः
स र्वा न ४ य व ग ज भ यि यो दि गा र्वा य वि ग व्या ४ वि य व र ने भ ग म दि सी वा ज य का भ वा ज इ दि व व स वी क ४ य न

[illegible]

सुखमा ॥ जावनिमनस्य वा अरुणयुधानिरावयन्ति गावयन्ति कस्य काटि नियममगसदमासिसमावात्य वा द्यूष्या
निकटि विष्मि ॥ गावगीयकुवर्ति वा अकुसकाटि नियममगसदमासिसाहीरुविष्मि ॥ जावनिमनस्य वा अरुणयुधानिरावयन्ति
विष्मि ॥ गावगीयकुवर्ति वा अकुसकाटि नियममगसदमासिसाहीरुविष्मि ॥ अनेककस्यकाटि युगमगसदमासिसाहीरुविष्मि ॥
मदावादावासीवायसनीसकवत्तमयानीदिवादिमाननीसाहीरुविष्मि ॥ अनेककस्यकाटि युगमगसदमासिसाहीरुविष्मि ॥
वा अरुणयुधानिरावयन्ति गावयन्ति कस्य काटि नियममगसदमासिसाहीरुविष्मि ॥ अनेककस्यकाटि युगमगसदमासिसाहीरुविष्मि ॥
दीवादिमाननीसाहीरुविष्मि ॥ अनेककस्यकाटि युगमगसदमासिसाहीरुविष्मि ॥ अनेककस्यकाटि युगमगसदमासिसाहीरुविष्मि ॥
अनेककस्यकाटि युगमगसदमासिसाहीरुविष्मि ॥ अनेककस्यकाटि युगमगसदमासिसाहीरुविष्मि ॥ अनेककस्यकाटि युगमगसदमासिसाहीरुविष्मि ॥

आमवस्यसाकस्यसुखिगभरविष्मि ॥ अदावादावासीवायसनीसकवत्तमयानीदिवादिमाननीसाहीरुविष्मि ॥ अनेककस्यकाटि युगमगसदमासिसाहीरुविष्मि ॥
वसवगवकीभारिद्वय ४ यासादिकादनेनीय ४ यवमयाभुरवज्ञेयसकवगयासमत्वागनेभारिद्वय ४ यासादिकादनेनीय ४ यवमयाभुरवज्ञेयसकवगयासमत्वागनेभारिद्वय ४
मिषमथागमसमवक्षनगगारुविष्मि ॥ अनेककस्यकाटि युगमगसदमासिसाहीरुविष्मि ॥ अनेककस्यकाटि युगमगसदमासिसाहीरुविष्मि ॥
मि ॥ ०० मान्यवजयासिमकावाजागुमानूसमानिसवभामाननगनवाडाधर्मराभकेयाजनात्यस्यसकवगयासमत्वागनेभारिद्वय ४
धर्मराभकेयाजनात्यस्यसकवगयासमत्वागनेभारिद्वय ४ यासादिकादनेनीय ४ यवमयाभुरवज्ञेयसकवगयासमत्वागनेभारिद्वय ४
वृद्धः ०० २ वा अकुसकाटि नियममगसदमासिसाहीरुविष्मि ॥ अनेककस्यकाटि युगमगसदमासिसाहीरुविष्मि ॥ अनेककस्यकाटि युगमगसदमासिसाहीरुविष्मि ॥

मिथ्यानि॥ सर्वसाकयनीकं धर्मप्रवर्तनं आसीत्॥ अथरुमनन धर्मप्रवर्तनं वेदिकारविद्यानूतनाजाम्
कसंदुष्टो॥ अथमयागधर्मकाटिनियममगसंरुमाध्वानिगानिरुविद्यनि॥ अथमयागीकानागगय्युत्तनीरुगः
यैनामविद्यामरुमिविसाविस्तीर्णयजाकगारविद्यनि॥ अथममनवकगमिष्येनियमसाकइष्टान्यनमइष्टममिष्टिना
निरुविद्यनि॥ अथमयनकानीवमलुवाउत्यकाटिनियममगसंरुमात्तएवयत्तयानाकमलमलान्यववकातिरुः
विद्यनि॥ अथमयनकानिरुवकवदिकवाउकाटिनियममगसंरुमात्तिरावदीजान्यवसापिगानिरुविद्यनि॥ अथमयन
कानिसत्यकाटिनियममगसंरुमानिससावासाविद्यानिरुविद्यनि॥ अथमयाविद्यसुविद्यसविस्तीर्णयनिमि

मय्यस्मभ्यविद्युत्तगारविद्यनि॥ अथममसर्वेकिइयवसमरुमावकाकवारविद्यनि॥ अथममवाउकसजविद्य
समभिषुजनकवामरुगीभाकि॥ रुकारविद्यनि॥ सत्ययनीवाथमपार्यसर्वेविषयज्जवकिगीरविद्यनि॥ पावि
णालमभनपीडिगेभनरुक्कचकअसर्वेपववकनवमाइगेभनपसंग्रभनपासगपायसअरुविद्यनि॥ एवमस
मसवाउथममनूयवाकीइनेनेवयमसधर्मशिवधमःसवर्ज्युलमाकमसुत्तवाउधवकारिकुलिकुन्यपागकी
पानिकइसत्तयोइवकयात्तनयीइमाकवकुइमसावाउनीमवलेपासेवावाइवकीइदवगमानामनेकवीवयक
मगसंरुमात्तिमसावत्तवकातिमसस्यनि॥ उवावावावावीवगभनीपाप्यनि॥ सर्वेदवदवनेकःसवर्ज्युलमाकमसुत्त

इति विष्णवे ॥ ग न वा वरा सन सर्वद वरु डाना न्य वरा सि गानि रवि स्थिति ॥ उ अ वि सारु मु म दा सा या ला क ध गे ॥ सर्वद व
नानि सूर्य क व क गानि ना ना गं श्रु य लगारु णानि सं सारु स्थिति ॥ ग अ अ स्य म दा वा जा ॥ सु व र्मु य रा सा क म स्यः सु य
न्य वा ज स्य द जा थ यः ना ग श्रु य लगारु णानि सं सारु स्थिति ॥ ग व क न त व मु द न स म त्वा द न स दि क अ न के व र्ग ग न दी
वा ल का य म स द द अ क टी नि य म स द मु द अ न के र्ग ग न दी वा ल का स मा नी ग थ ग क का टि नि य म अ ग स द मु द मा नी सूर्य
य के र्ग क गानि ना ना ग श्रु य लगारु णानि सं सारु स्थिति ॥ ग व वा ल का य म स द द क टी नि य म अ ग स द मु द ना ना ना ग थ
ध र्ग ना द्य स्थितिः सु व र्मु व र्मु म या व रा सः पा र र वि स्थिति ॥ ग न वा वरा सन ना र्थ न कानि र्ग ग न दी वा ल का स मा नि द द क य

[illegible]

निजये वरि कानि एषि षागि व च न रुवाया र्सी स्य वा ३४ अथ यत्तु गानि समत्वा द भसुदि क ग गान दी वात्सु का स म
 र्द द्य क उ का टि निय ग ग स द स धान कानि ग थ ग ग का टि निय ग ग स द स धानि स्य क स द द्य क उ ष्य गि वि गानि गे न
 का स न ग न स म य न क य द ने क को ये क स व नि शो धि न ग स ध र्म र्म न क स रि को ध र्म स न ग ग स ग इ व ४३ र्सी क मि षा मिः
 त्वं स त्व द षा नी ग ग ध नि वा धि म शु य द भ यि षा मिः त्वं स त्व द षा वा धि म शु व द षा ग ग द म वा ज स ला य वि व ४४ स र्ग स
 य गि वि मि षा नि स व स त्वान मि का वा न वा धि ग ग य ध व म वे वा धा न्य धि व नान्य धि वि गान्य न कानि इ स व का टि नि
 य ग ग स द स धानि व स म र्सी क वि षा मिः त्वं स त्व द षा वा धि म शु य वि ग यि षा मिः त्वं स त्व द षा वा धि म स र्ग स ला क धा नः य

वाजयिष्यसिः त्वं सत्यं वृषदुर्मवाजमसायविष्णुः ॥ कृणुमिदं यथावदस्मिन् सत्यं नानाविदगव्यं मयित्वा मावसे
 न्यः ॥ अहिर्भुङ्क्ष्वसि त्वं सत्यं वृषदुर्मवाजमसायविष्णुः ॥ नृपमयः आनविदुः कृणुमिदं यथावदस्मिन् सत्यं नानाविदगव्यं मयित्वा मावसे
 ॥ पृथ्वीयिष्यसिः त्वं सत्यं वृषदुर्मवाजमसायविष्णुः ॥ सर्वजिनारिर्भुङ्क्ष्वसि त्वं सत्यं वृषदुर्मवाजमसायविष्णुः ॥ कावमनूकवधर्म
 यकं ॥ यवाकनिष्यसिः त्वं सत्यं वृषदुर्मवाजमसायविष्णुः ॥ आयययिष्यसिः त्वं सत्यं वृषदुर्मवाजमसायविष्णुः ॥ उदयिष्यसिः त्वं
 सत्यं वृषदुर्मवाजमसायविष्णुः ॥ यदसयिष्यसिः त्वं सत्यं वृषदुर्मवाजमसायविष्णुः ॥ यदसयिष्यसिः त्वं सत्यं वृषदुर्मवाजमसायविष्णुः ॥
 वरुणयवाकनिष्यसिः त्वं सत्यं वृषदुर्मवाजमसायविष्णुः ॥ नकातिक्रमः अगमसदमाजि ॥ यगावयिष्यसिः त्वं सत्यं वृषदुर्मवाजमसायविष्णुः ॥

नियम भगवत्सुमासिस्तुलीमात्मकारयसमवागायविभाययिष्यसि त्वं सत्यव्रयानकानिस्तुलीकोटिनियम भगवत्सुमासिस्तुली
त्रयकाण ॥ ज्ञानागयिष्यसि त्वं सत्यव्रयानकानिगथागककोटिनियम भगवत्सुमासिस्तुली धर्मागैयलीनदया शयनदेवोमी
मनस्यवाजयन्तारिसत्कावमक भवारिसैस्कावमवगनेववात्मरावनयदके धर्मिकेभायिकेनमसुगतायज्ञधर्मगीवेव
द्विष्टागि ॥ इह धर्मिकेभायिकेनमसुगतावजगजसासमत्वागता रविष्टागिः प्रियावगजसावसञ्जीवासीरविष्टागि ॥ सर्वपु
त्राधिकार्यसर्वभयवधसत्य धर्ममस्तुनिगृहीता रविष्टागि ॥ नवंसकश्चत्वा नामदावाजालगवनेभगवद्वेदेन ॥ य कश्चिद
देकरुगवंतमनस्यवाजालवग ॥ साइननेवप्रयस धर्ममभववसुमः सुवर्णयुगसाकूमसुगुडवाजी सुगुयाग ॥ गाधसुगुडधन

३१

कारिकृतिरुन्मयानकाउपाभिकाः सत्ययुक्तवृक्षयुक्तमानयन्यजयग ॥ ज्ञानाकैवकुम्भमसावाजानामथायगडाजकृत
सुसाधिमैष्टाधयग ॥ नानागधनके सीसिकैकयुग ॥ मध्वधर्मभयवसाारि धर्मसावाजैः साधिसिधिवर्गमभयानामनो
इष्टयसर्वदयवावात्किंसाधं कभस्युय्यभंदयाग ॥ समनकवनिषकुस्यरदकरुगवंकस्यारि काधर्मोसुनग
मसगनमनस्यवाजनासाकैवकुम्भमसावाजानीमथायनानागधनययिगयाः सत्यधर्मसुगुडकरुगवंकस्यः
सुवर्णयुगसाकूमसुगुडवाजसायजाथयः नानागधनानाधनसगानिध्वमिगसिनेवकेमसवमरुके ॥ साकैव
कुम्भमसावाजानीसकसकरुगवनगगाचययिकेवाकनानागंधधयसगाकजासिसैस्कास्यगि ॥ उदावाधधनाद्यास्यगि

सुवर्णवर्णमया श्ववराणां ॥ इति विष्णुः ॥ गनरावराणां साक्षात् रगवानां च अरासिगानि रविष्णुः ॥ वृद्धग २२
 दायण ४ सुवर्णवर्णमया श्ववराणां ॥ इति विष्णुः ॥ गनरावराणां साक्षात् रगवानां च अरासिगानि रविष्णुः ॥ वृद्धग २२
 अकृष्णनायगाः ॥ इति विष्णुः ॥ गनरावराणां साक्षात् रगवानां च अरासिगानि रविष्णुः ॥ वृद्धग २२
 निरुदस्ययकृष्णनायगाः ॥ इति विष्णुः ॥ गनरावराणां साक्षात् रगवानां च अरासिगानि रविष्णुः ॥ वृद्धग २२
 गनरावराणां साक्षात् रगवानां च अरासिगानि रविष्णुः ॥ वृद्धग २२
 गनरावराणां साक्षात् रगवानां च अरासिगानि रविष्णुः ॥ वृद्धग २२

करुगवी चरुनामसु वाजाभगदवायग ॥ नकवसयसा केवकु मरुवाजा नौ सुकसु करुगवनगगानाम्पय्यनवीक
 गगानि नानागंधधयसगाऊगामिर्मस्यथानि ॥ उदावी चनानागभाना द्याथानि सुवर्गवेरुमया ४वावरागा ४ ॥ प्यासा
 इरुविथानि ॥ गारि चवरागा रिसर्वरुवना न्यवरागिगानि रविथानि ॥ एवमकेवत्वा नामसु वाजा रगर्वनमगदवायग
 ॥ अथरुदनकरुगवत्ससु वरुयुलासा कसयसु वदनाऊस्यमान्य वय्यानिदृष्ट धर्मिकानिमा वयवाउयिकानि वरुमानिर्मय
 च्यमानसु वरुसुमायवु ककु गलस्यमन्य वायविमिगय न्यसुं चयविगदंसंय च्यमाना सुवरीरुदनकरुगवनयत्वा नामसु वा
 जा ॥ सर्वलयालिवाना अनकगकभगसुदुम ४सादु सुरुवनगगा नानागंधधयसगाऊगासा वादेगा ४समाना अरुध्वेवात्स

लवेयनसमन्वयवाजसायगगससकवकटसुःस्थितं नानागुहकसिद्धिः नानासंकावसमसंकाववाजकसंगनायसं
 कुमिष्यामाः धर्मप्रवचनयाः वस्त्रावसदायगिः भुक् भुवदवानामिन्द्रः सवस्वगीवमदादवीदराः आश्वमदादवीदरवृथिवी
 दवगासंजयश्चः सदायकसनांयगिः छविभगिसदायकसनायगयश्चः सद्भवश्चदवयवावजयाभिश्चः गुह्यकाधियगि
 मासिरुदश्चयकसनायगिः दवीरयकययभविवावाः अनवगयश्चनागवाजः सागवश्चनागवाजाः चनेकः ॥ ५३ ॥
 अनका निवदवकोटिनियुगभगसदमासिश्चश्चवासरवेयनसमन्वयवाजस्यः युगं नानासंकावसंकावमंवाज
 कर्तयगस्य धर्मराजकसारिकः यथाहिकीर्त्या भवन्त्याः ओरयगृह्यः नानासंकावसमसंकावधर्मासनीयुद्धार्थः

युगधर्मप्रवचनयवयंरुदकरगवंचलायामदावाजा अनकेजकभगसदमेवलिश्चसवेः सार्धसमभरविष्णामः
 रुसमन्वयवाजसकस्थानमिसदायकस्यकस्थानसपायकस्थानरुदसमदावसादावदाहः ॥ अननधर्माष्टमवसनसगपि
 गाः ॥ सकः ॥ ससमन्वयवाजसावक्रौकविष्णामः ॥ यविणसीयविगृहंयविणालनंभक्तिसस्ययनंकविष्णामः ॥ गस्यवाज
 कृतस्यवनगवस्यविषयजस्यवक्रौकविष्णामः ॥ यविणसीयविगृहंयविणालनंभक्तिसस्ययनंकविष्णामः ॥ यविण
 यीसक्रौयदवीयसीपायसराः ॥ सवर्ग्युगसाकमस्यसुपुदवाजस्ययवगः ॥ २ ॥ उदावासादेकरगवमन्वयवाजः सु
 यज्ञेयुगसाकमस्यसुपुदवाजस्य धावकारिकृत्तिकृत्त्यः यासकीयासिकानसंकर्यनमानयस्त्रयजयदसाकैवयुद्धः

मरुवाजानामनकानिउक्ककोटिनिशुभभगसदुमान्यनकानिधर्मभवदन॥नदनधर्ममिरुचनननसंगययत्रयगिम
नियदिद्यात्मरुवानिमरुगाउसानविद्वेयत्नवासाकंवीर्यवसामववसंरसंजनयक्रुजग्विप्रियभलसक्रायासाकंकायवन
विद्वेयन्नगपिययैरगवभत्वाशामरुवाजाःसवलयविवावाभनेकेउक्ककोटिनियुगभगदुमरुस्यवविषयत्रकक
विष्णुमाःरुदनरुगवैविषयमस्माकंसयक्रुःसर्वविषयवासिनादोःभत्रभर्तृविषयउयक्रुनिदवगाभ्ररुदनरुगव
नविषयस्यक्रुके॥गक्रुविषयनानाविष्वाविषयेसायारविष्वांनि॥दान्नानिवनउसक्रुलानिरविष्वांनि॥सर्वविषयगग
निरसत्त्वानिकलसदुजागानिरविष्वांनि॥रुचुनडागानिविष्वांनि॥निवायमायन्नानि॥नानाविष्वांनि॥गद्वकागविषय

याइरविष्वांनि॥नानादिगुःभगगाभ्रकायागः॥याइरविष्वांनि॥गदनक्रुमिरुयवस्यवविद्वानिरविष्वांनि॥
सूर्ययगिद्वकानियसमात्यादयिष्वांनिःयमुगदाभ्ररविष्वांनि॥सूर्ययस्यभ्रसगगसमिगगभगवगगोसूर्ययवसा
शीनाइयथगगोरविष्वांनि॥उत्कालागभ्रसुवसुनियविष्वांनि॥गगभ्रकवकासनकालंयाइरविष्वांनि॥यथिवीकर्म
भ्ररविष्वांनि॥रुवाभ्रयिथिवीगगाःसक्रुयकः॥भ्रयिथिविषमवागाभ्रयास्यंनि॥विषमवर्षाभ्ररविष्वांनि॥यथि
विइरिक्ककानात्रभ्रसर्वविषयरविष्वांनि॥पवयक्रुमिरुगविष्वांनि॥भ्रयासवदुसैरविष्वांनि॥गगभ्रसक्रुकेरु
दनरुगवैभ्ररुमिरुवाजाःसवलयविवावागीमनकेषावक्रुभगसदुमाभ्रविषयवासिनीवदवनागानीगविषय

यागगः नार्हगासम्यक्सीदधनः मद्गगाकावृथाव साविष्ठ ननः मक्का काटि नियग भगस रुमा निदि व्या मित्र कगः
 न इन्द्र वग भगगज्ञाने नाना विधाने कः सर्वे य ईरि कृ यि ग म काटि नियग भगस रुमा निवे कस्य सीम्य सीदध
 न व सीदः काटि नियग भगस रुमा निवे कः पुन गया विष्ठ ने मः सर ग वं गा ग भग ग नार्हगासम्यक्सीदध नार्थ ॥ सुक्क
 पुला साक्रमः सुगुडवा जा विस्व मः सर्व सत्त्वानी मथाय स र्द जम् द्वा प सी यु का मिगः ॥ म नू वा वा ज न स र्द ज म् द्वा प मः
 गानिः लो कै क ल क क वा मि वा ज का यो मि वा ज भा स्ता मिः वा ज क व मानिः पुनिय गानिः ये वि म स त्वा ॥ सु दिव ना र विष्ठ
 निगा नि स द्वा मि र ग वं गा ग भग ग नार्हगाः सम्यक्सीदध नार्थ ॥ सु व ई पु ला साक्रमः सुगुडवा ज उ य द मिगः ॥

दीयिग २ सैय का भिग ३ गे न र द न र ग यै रु रु ना गे न पु ग्ग य न गे न म नू य जा उ ना य थ म य ॥ सु व र्ण पु र सा क म १ सु य
 नु वा उ १ स ल क्क य म म यि ग य १ स ल क्क य पू यि ग य १ ॥ न र्वे म के र ग वा थ रु वा म दा वा जा म ग द वा व ग ॥ गे न दि वे त्वा नो म
 हा वा जा १ स व स यो लि वा वा १ अ व थ ग वी म नू य वा जा ह य सु व र्ण पु र सा क म य ॥ सु य नु वा उ य थ म नाः पू यि ग्ग नी
 म दा न सो स र्वे क वि षा निः व का उ र्थ ग थ म दा वा जा वः सु य नु वा उ व का रि क्क रि क्क थ पा स का पा भि का ॥ व र्ण क र्ण ना
 नु द र्भ के ॥ द व मा नू य सु व य सा क स व र्ण क्क यानि क वि षा नि ॥ ॐ म सु व र्ण पु र सा क मः सु य नु वा उ वि स व म ली य क
 म यि षा नि ॥ अ व थ य म रि व रु रि म दा वा उ र्थ वीः सु य नु वा उ व का नाः रि क्क रि क्क थ पा भि का पा सि का न म व का क र्क

याथायवियासनीयविगानयविगुदउयविदार्थः॥आनिसुखयनकृष्यः॥यथाश्वसुखभावनकारिरिकृदिकृष्यया
मकायासिकाः॥अत्रिकेगारवेय॥अनत्याडिगाअनयसीगायायसा॥सुखयिका॥४०॥मैसुवर्गयरासाक्रमः॥सुखवज्ज
यिकुवज्जसुखानीसीपकाभयि॥अथश्वसुखेभयसामसावाजाः॥यथावाद्यमसावाजाः॥विबटकामसावाजाः॥विबूषकाम
सावाजाः॥उक्तायासनयः॥नकीआनियारुद्राक्रमीगर्कलाः॥यक्रिजजामकुसीयथियाः॥यक्रिजजयनरुगवीरुनाजसि
पुनंमगसीयलायामरिसीमखः॥सावयारिगेभधोरिरुगवकामरिसुव॥॥जिनवन्दविमलवसुहिनसूर्यः॥सदमकिवजार
॥जिनकमलविमलारुनरी॥जिनकमलमलसविबज्जदभनाग॥जिनगुनसागवः॥कस्यअनकवत्ताकवहिनसमूह॥॥ज्ञान

मम गणसितयर्हसमाधिः भगवत्समर्पणं कुरुते नमः ॥ अथ विष्णुसमन्तमिह आसदमासीत् ॥ कथयन् ज्ञातव्यं ॥ स
हसन् यथावत् ज्ञातव्यं ॥ काश्चन गिरिविष्णुः कर्मा ॥ सुवर्णकनकामलजिर्न गिरिविष्णुः ॥ सुवर्णमिव कल्पः ॥ बद्ध गिरिविष्णुः ॥ जिन्ननम
स्त्वाम ॥ आकाशगुरुस्य चन्द्रसंज्ञः ॥ उपकवनिः ॥ गथागगर्भी ॥ आकाशमयी विष्णुसमर्पणं ॥ जिन्ननमस्त्वाम ॥ अ
थ हस्तगुरुगर्वी ॥ अमुं नामदावा ज्ञातः ॥ गथापरियणवः ॥ अथ हस्तगुरुगर्वी ॥ उपकवनिः ॥ गथागगर्भी ॥ आकाशमयी विष्णुसमर्पणं ॥ जिन्ननमस्त्वाम ॥ अ
थ हस्तगुरुगर्वी ॥ अमुं नामदावा ज्ञातः ॥ गथापरियणवः ॥ अथ हस्तगुरुगर्वी ॥ उपकवनिः ॥ गथागगर्भी ॥ आकाशमयी विष्णुसमर्पणं ॥ जिन्ननमस्त्वाम ॥ अ

जान ३ मदन ४ यदर्थ जागा धर्म भवण लय विषयानि ॥ यना इयं जम्बू द्वीप ४ कस म्थर वः सु रि का व म मा या ठ स व र ज म्बू छी
 यम्बू सु रि का निरु व कि सर्व स त्थानि य स ना सि न य ग वि व थ यि य ग ल सौ इ णा यि य ग व वा उ त्ती न म्बू यो यि य ग उ म्बू ४ से
 न स र्थे दि यी ४ य व म स रू क य क र्थे य व य द्वा नि व रू न क र्थे म्बू क व म्थ य म र्थे यी स न रू वः ॥ य व म्बू क व र्थे सु न्ना
 उ ४ य थ रू क व र्थे वः सर्व गु ष्म र्थे वः सु ग्द रू ॥ ग र्थे यी स रू न्ना उ वा का उ रू यो वा उ गु ष्म दी नी ॥ य थ ग्री क ल दि म्बू
 लि रू य म न ४ य रि ल रू ग रू यी य द् व र्थे ॥ ग र्थे यी स रू व व न्द गु ष्म रू व दी रू व ग ॥ न व य गी ना य र्थे व दि न ल क ल म्बू ४ सर्व व
 त्ता क र्थे क व रू व रू ग र्थे यी स रू न्ना उ ४ सर्व रू य रू स रू म न्द य ग ल नी द व ग म्बू यि य र्थे यी द व न्द न म म म रू ग म्बू य रू ४

[illegible]

वदसुसमेवयकिचकिस्मा॥ अथकिचित्तासुयासनेनः नकी गानिवयवादिः प्राववितादकिमा जानुमकुलानिः यथिवा
युगिवायथनरुगवास्नाउरितियुनमः रुगवकमकेदवायग॥ यवमयिरुदकरुगवायवा नामदा नानुकेकासदावा
॥ यथयकमयविवावाः धर्मनकस्यारिक्का ॥ सदानरुद्वारविष्णाम ॥ धर्मरानकमानः नाययविवायनाययगि॥
॥ सुवर्णयुगसाकूमसुगुदवाडा वरुमदावाययविवर्जनामसकम॥ १० ॥ अथस्वसुसवस्वगीमदादवीनका गयी ज०
वदवाववितादकिमजानुमकुलं यथिवायुगिवायथनरुगवास्नावसिः पुर्वस्वरुगवकमकेदवायग॥ अरुमयिरु
दकरुगवसुवस्वगीमदादवीगसुधर्मरानकस्यारिक्कावाकः विरुषमाथययुगिरायकः मयसुविष्णामि॥ धावनीयानुदा

स्यामिनिवृकयवासी रावसी रायिष्णामि॥ मरुनकव धर्मरानकस्यारिक्का जानारुवसी कविष्णामि स्जानिकानिधिगयद
वाउह नानिर्वृम ॥ सुवर्णयुगसाकूमसुगुदवाडा यमिगुदमिरुविष्णकि॥ विस्मविगानिदगानादिसुगीमिः गलधर्मः
रानकस्यारिक्काः सुनिवृकयदवीजेनाः न्युपसी रुमिष्णामि॥ धावनीयानुयदास्यामिः सुगुपसी युमासनाययवायीः
सुवर्णयुगसाकूमसुगुदवाडा ॥ गवीद्वसुमाववकः कससमलानीसत्यानामथायविर्वः उमर्द्धाययवग॥ नवाके
यमकअर्थयथग॥ अनेकानिवसुतानिर्वृम॥ सुवर्णयुगसाकूमसुगुदवाडा गत्याः यथिवायिक्कयुद्वारवयुधो अविगु
वज्ञानसुभयगिलरुगनइकमेवयअयुधसीयमिचरुयः सीयगिलरुय ॥ जागिमानगर्दवापेविमिर्वः यथस्वयुगि

(Faint handwritten Devanagari script)

अथगासिककाशकविकलविमलमणिजालमणिसाधिवैभूमयनिभिभिन्नियुक्तिगत्यादा॥रामयनमीशुलीकंकत्वामका
दद्यानिकापयग॥सुवर्णदयरादमध्वेनस्त्रययग॥धर्मगानिवाप्रवीक्षितोविमेष्टययग॥कल्याध्वस्तयिगान्यस्त
बलावाद्यटधातिव्यङ्ग्युत्तुर्वधपर्यन्तिगयकेरुत्यज्ञियोउयगरक्तधठयगाकेधगादवीसमरीकगादआदभनयदायः
अथगवभाकिनिपैदेकेमेनेसामोदध्वसमावेयाऊयग॥सीमावंध्वमगठकर्यागयअकार्यकार्यसमासरण॥अननमलः
यद्देकुमेनेसीमावंध्वसमासरण॥स्याद्युद॥अनकेनयनदिलिरगिसःखिसख्यादा॥रुगयगठयठगठसात्वोज्ञननमलज
यनत्वानभार्कयोऊयग॥गद्यथा॥सुगयेविग्नावगिस्ताहा॥नक्रगायठपासयन्वडुदिहानक्रगऊतपीदाःउवावावासीक

मर्यादा ॥ धारुमं कोरुमीरगा ॥ १ ॥ आनुर यदा नृनामम विजमसादा ॥ सगगसादा ॥ सागवमीरगायसादा ॥ स्वं ॥
सात्रायसादा ॥ नीलकं यसादा ॥ अथवाजिगदी यसादा ॥ दिमवत्सरगायसादा ॥ अनिमिषय यसादा ॥ नम
रुगययवा अनेसुम भासवसमिसिधनुमगुय दासयुअनस्यकुसादा ॥ नगनुमानकर्मनागस्य धर्मनानकस्यारिकानथा
यगवीय धर्मनयनिकानालश्वरनामथयसमवायगुगनसिधेयदवगहो ॥ साधे ॥ धारुमं अमया नगनवा सर्वगाना ॥ १ ॥
गयगमनी कविष्यामि ॥ सर्वगहकलिकसूय नक्र ॥ ३ ॥ कापीदा ॥ ४ ॥ सपुविनायकवीजसर्वकाशादवगाज युगमयिष्यामि ॥ य
गवीसूयधवावकानी ॥ रिकुरि कुर्ययासकायासिकानी ॥ ५ ॥ विगानुगदायगा ॥ सीतावनिर्वातयुगि सरय ॥ ६ ॥ अथेयमि

काथरयः ॥ यानरुवाया ॥ १ ॥ सयसं वा ॥ २ ॥ अथवत्सरगायसीसयमिदयोसाधकावमदायसाधसाधसवसगिमदादविव
रुजनादिगाययुगियना ॥ यरुज नमसाय यसाधिमानिमन्त्रधारीयकानिसावसयगीदवी ॥ रुगवग ॥ ३ ॥ यादाहिवदन
कला ॥ ४ ॥ कानिषर्ग ॥ ५ ॥ अथवत्सरगाययाकनचकीनुथो ॥ मदायान्त ॥ ६ ॥ यीसवसगीमाहयगिसा ॥ सवसगीमदादः
वियजनायामरुगया ॥ विद्यागासर्वसाकषववदका ॥ मदागुगाववसमानिगाकानादः ॥ रविवववसिनी ॥ ७ ॥ गुरुवसु
धवयमि ॥ नकयादनगि ॥ ८ ॥ सर्वदवासमगसगी ॥ सयववनसिदं ॥ ९ ॥ विमस्यै ॥ १० ॥ सत्वानीराववववनी ॥ ११ ॥
॥ सा सुयदं ॥ १२ ॥ सयविव ॥ १३ ॥ अथवत्सरगाय ॥ १४ ॥ दिगुसार्पि ॥ १५ ॥ यिर्नसवमि ॥ १६ ॥ सयववीयिसमगि ॥ १७ ॥ दिममगि ॥ १८ ॥ अथमगी ॥ १९ ॥ गसवि

मन्त्रः दत्तविद्यैः श्रीमन्त्रिणा यैः साकशकप्रियसिद्धयुगसामनद्विसिद्धयः ॥ अथ गिदगः ॥ अथ गिदगः द्दिनमवि
मविः मदादयि यगिगऊनमस्कारः सर्वसत्त्वानीयद्विप्रयुगारयकुट्टिर्धामसिद्धकुम्भः ॥ साकगुणियठककायादि
द्विगद्यथा ॥ सदायुगवः दिसिश्मिलिविवेकः मनवन्तुममाया ॥ सर्वसत्त्वानीयः ॥ रगवन्तुदद्या ॥ सवस्वयानरावन
कदानकवगिः दिसिः मिलिः दिसिः ॥ आवाहयामि मदादवाः ॥ द्दुष्टसन्धनः ॥ धर्मसन्धनः ॥ सद्यसन्धनः ॥ लुप्तसन्धनः ॥ वन्तु
सन्धनः ॥ यथाकसन्धवादिनः ॥ अकिगनः ॥ अर्षीसन्धवन्तुनः ॥ आवाहयामि मदादवाः ॥ दिसिश्मिलिविवेकः ॥ सममन्त्रिना
मायासर्वसत्त्वानी ॥ नमो रगवन्तुसवस्वयसिद्धकुम्भः ॥ द्दुष्टाद्या ॥ अथ आवाहयामि कवन्तुकोटिन्धाममदादवाः ॥ सवस्व

[illegible]

संयच्छसंयच्छ ॥ अत्र नि याम सा द व्यास या क अस्मत्सु सव सु फ ॥ अनेगदि यीदि भीसत्तानी वि द प्रगि यी दि भीसत्त
न्य वसाय संकुमगि र वही ग ह्यो दि यन कानि सत्त काटि नियुग भगस द्मा निः सर्वसु श्वेय भाननः सुश्वेगानि रव
यनि ॥ अवे क स्यागी वेपुमि सुप्यनि ॥ अनुनवाः यानन धननवाः दि वम्यसु वरु मेजिम क वे प्र यं मे श्वमिता य
वास जाग वय वजगादि रि व श्वे श्वय क व र्ण ॥ स वी य क व र स म द्या नि स त्या नि र वि षा नि ॥ श्रिया द व्या द्य ए व न स म स ग
या ग ग स्या य डा क ग या ॥ ग भ श्वय स्या श्व ध या व दी या श्व दा ग या ॥ श्रिया द व्या सि क त्या ल न्ना ल य न्ना व यि ग या ॥ ग स्या
श्व ग श्व य स्या श्व य दा ग वीः व स वि द्वा वा शि क्क यानि ॥ म स्या म स्या द्या वा शि वि व र्द्ध ग र म उ द म स्या ग ॥ वि व ध ग द्य वा शि व

गंज

सा धन्य य र्विगा शानि वः द वगास दा द्वा स स्या विगा य इ म द्वा द व ग सा र निः स स्या नि स वि ग र वां शा स व र्वे य र सा क स
स्य सु ग न्द वा उ स्या ना म ल य म द्या वा यि ग वी र गा स त्या र्मु म सा द वी स म त्या द वि षा मि र व वी व स द गी श्रि य क वि षा मि ॥ अ
उ क व ग्वा वा उ भान्नीः य म्भ क सु म य र गा न व व स व र्ण ॥ अ न्ना नि स क व ल य र व न ग्रा म सा द वी षा नि व स गि म्मा ॥ य र क
श्रि य र्वा भान्य वा शि वि व र्द्ध यि गु क मा र व ग ॥ ग न र्द र्मु स्या ध यि ग या ॥ अ वि र्ग व ल य र व ग न स ग न्द व स न भानि ती
रु यि ग वी र न म स्या र ग व गी व लः क सु म गु त्ता वा व र्ध य क न क गि विः स व र्ण क श्व न य र सी नि य र्वा ग ग स्या र्ग र म
स्य म्भ स र्द स्या सि क त्याः ना म ल य म द्या वा यि ग वीः श्रिया द व्या र्मु न म स्या य डा क र्वा य स्या य स्या ग भ श्व दा ग या शाना ना व

सविदावाभनिफकबाशागस्यसुवर्गपुणसाक्रमस्यसुवर्गवाजसाःनरावनगनकासेनग्रामदायवीगस्यगदंअ
मत्वारविषीगिगस्यसमदाधन्यवाभिविद्वयियगिगिनग्रामदायवीमोवादायिगुकाभनः००मविशामका४सा
वयिगबाशागश्या॥नमःसर्वदद्यानामगीगाःनागरगुगयनानी॥नमःसर्वदद्याधिसत्त्वाना॥नमःमेरीयप्ररुकी
नीःवाधिसत्त्वाना॥गवीनमस्तुत्तानीविशायीअयामि॥००यीमविशामस्तुत्तानी॥स्याद्युदं॥पुमिपुनर्वसमननग
मदाकायपुत्रियायसत्त्वधसमगानपय॥आयानधर्मिगामदासनाःमदगजायसीदिग॥मविर्गदीगीसमयानया
सनाः००मदद्यादिरिषकधर्मिगामपय॥नकाभनिपदाधिसत्त्वदनामस्तुयदाशासमधिविरिववनककमसे००याव

गभययमाने०सफववाभकाशपगासर्वसासिनयर्वाक॥अयवाकासर्वदद्यानारगवगाःपुष्यधयनभपजीकृत्वा
अमनभसर्वसत्त्वानाकेःसर्वदद्यानस्तुपविद्यवमायगेनसर्वकारिप्राया०सम॥क्रियुसम॥अनुगुदं॥सर्वोक्त
त्वाविदायैवाःअथायगनीवाःअमयनमनसककृत्वागधधयपसाकेदगवी॥कोक्रमासनीयुहपयिगवीःपुष्यावकी
नुगमिगवी॥गुरुकृतेग्रामदायवीविमित्वागुरुकासागि॥गदयादायगुगदुवाःअमवाःनगप्रवाःनिगमवाःविद
नवाःअथायनेवाःनउपगुकेविदेकलीकसिषीगि॥दिनचनवाअवर्गनवाःअननवाःअथादिअधोपकनचस
मद्वारि०सुवसुदवायधननः॥सिगानिरविर्वाकि॥कमप्रमसाधयदियगे०गनसर्वजियादया०समरावयुस

[illegible][illegible]

लानामर्थयः दिगायसुखायगाधर्मराशकन धवययुषा असुवर्षयुगसाकूमः सुगुदवास्वयकाभगः अर्द्धदृष्टा य
थिदीदवगः सयनिवात्रा अउसिगवाय रविष्ठा मि रगेन रुदनेरुगवी आस्माकं कायः मरुवसवीर्यममसउनि
रीरविष्ठां गि रगेउ श्वश्री आस्माकं कायमा वशु नि॥ मयवरुगवदृष्टयीः यथिदीदवगायी ॥ अर्द्धन धर्मरागः
त्रसनः सकयिगायाः मरुगजा वलवीर्यममवगयुगिसणयीः अर्यमययथिदीसकः या अनसहसिका या अमदीयम
रुगाः यथिदीदवगाविवर्धयिष्ठां गि रउ अउसिगवाय मरुवयथिदीरविष्ठां गि ॥ अर्द्धमानिवरुदगवगवग सुवसत्यानिः य
थिदीसन्निगिगानि रविष्ठां गि रउ गायगमिष्ठां निः मरुनिकिवरुविष्ठां गिः मरुनी वरुत्वा मरुसत्यानिः यथि

वीगमानिः नानापुलगायवि रगमन्ययुग अकिः सुखानिवान् रविष्ठां निपागानिवसर्वा निः नानाविधिगमनान्
अवस्थाः मयनासनवसनरुवनः विमानाद्या ननयस्त्रवि न्म स श्रीरुदगदागदीविः अर्द्धमीत्यववयाभिः नानाविध
त्ययके वनसुखानिः यथिदीसर्पे गानिः यथिदीया इ रगानिः यथिदीयुगिमि गानिः उय रुउनु ॥ गेन रुदनेरुगव
नदरुनाः सर्वसत्यवस्माकंः रुगइगा करु वी ॥ अर्द्धवन्धमयः सुवर्षयुगसाकूमः सुगुदवाजः सस्वयगागयी ॥ स
करु वी मरुदरु वीमानयिगयी ॥ यउयिगयी ॥ यदारुदनेरुगवकाः सर्वसत्यानां नाक सत्याः नानागर्द्धस्थानिः
सुमयसुवीः धर्मराशकानामपाकममाय ॥ उयसंक्रम्यधर्मः सुवर्षयुगसाकूमः सुगुदवाजः अर्द्धमय ॥ अर्द्धत्वावयनव

[illegible][illegible]

दक्षप्रकयदमयिः ॥ मयस्कग ॥ गामनयका न्यवित्राय यपि अत्तयवनि कायय ॥ अन्तकान्यकवदः ॥ दवनि कायय
यपत्तका ॥ यकपिच यिदीदवगसत्वाः ॥ अस्तव वर्युता साकमस्यस ॥ अदवाउस्यार्थे ॥ गानिस्तानानिममसं कर्त्तव्यन ॥ अ
नमप्रकयुक्ताः ॥ नकयगाकाम्या ॥ नकरस्यमाः समसं कर्त्तानिचदवगास्तनानि ॥ गेवसकस कामाववत्रयः ॥ दवनि कायय
सफचत्तामयानिदियानिः विमानिसर्वा संकावसमसं कर्त्तानिर्मस्तकि ॥ गेसत्त ॥ वृगामनय साकाकृवित्रागसः सफ
चत्तामययः ॥ दियविमानसः ॥ यपत्तका ॥ गयेकेरसिच यिदीदवगेः सफचत्तासंमथदियः ॥ विमानसफ वावानयप
त्तका ॥ अयिण्यानिदियानिः सुशानियरुनरविद्याने ॥ नवमकट्टाय यिदीदवगारुजवनमगदवावग ॥ गनादेर

दत्तगवतनदृष्टाद्यिदीदवगागस्य धर्मज्ञानकस्यः शिवा धर्मोत्तमगगस्यः यथिवीदृष्टावसिध्यामिदं धर्मज्ञाननात्म
रावनगस्य धर्मज्ञानकस्यः शिवा धर्मोत्तमगगस्यः यथिवीदृष्टावसिध्यामिदं धर्मज्ञाननात्म
दत्तगवतनदृष्टाद्यिदीदवगागस्य धर्मज्ञानकस्यः शिवा धर्मोत्तमगगस्यः यथिवीदृष्टावसिध्यामिदं धर्मज्ञाननात्म
रावनगस्य धर्मज्ञानकस्यः शिवा धर्मोत्तमगगस्यः यथिवीदृष्टावसिध्यामिदं धर्मज्ञाननात्म
दत्तगवतनदृष्टाद्यिदीदवगागस्य धर्मज्ञानकस्यः शिवा धर्मोत्तमगगस्यः यथिवीदृष्टावसिध्यामिदं धर्मज्ञाननात्म
रावनगस्य धर्मज्ञानकस्यः शिवा धर्मोत्तमगगस्यः यथिवीदृष्टावसिध्यामिदं धर्मज्ञाननात्म

कृष्णः यद्विजानममुं सैव विद्यापिप्यथा नः रुगवामनाज्ज्ञेयमस्यः रुगवनामगदवायग ॥ सूर्यरुदकरुगवत्सवस्यरा
साकृमः सगुन्दवाजः नगार्देवानागग धनिः यगुगमवानगवनिगमवाउनयदेऽगयात्रययगनवाः निकन्दववाजाजः
कसेवागुदवापुयविष्णोः ॥ सगार्देरुदकरुगवगसुजयानामः सनायगेऽसाकृमस्यविः शरीरिमदासनापुगिरिः शगसै
गामवाः नगववाः निगमवाः उनयदेवाः वयवाः मित्रिकन्दववाः नजकूसवाः उपसैकमिष्णामि ॥ अहमसाननागमस
वनगस्यः धर्मरानकस्यरिकावक्राकविष्णामि ॥ यविगर्दः यविणसर्नैदमुयविदावैः सियविदावैः शगिस
स्ययनैकविष्णामि ॥ गयीवसर्वेषां धर्मभवनिदानीमुयवसदावकदाविकाजी ॥ ययीः यिग ॥ स्यदः स्यपरासाकृमस्ययवज

॥ २ ॥

दकमनकायकुष्ठादिकाः अपि गथाः गृह्यारुदकमनकपदमयिगाथाः स्यवस्यरासाकृमः सगुन्दवाजदकवाधिसत्यार्न
मथयमयिः सूर्यरुयग ॥ उगुदीर्गवा नकवथागगनामः धर्यवा ॥ अकमस्यस्यस्यवस्यरासाकृमस्यः सगुन्दवाजस्यनामः धर्यः
मर्मेरुवक ॥ उगुदीर्गवागेषीसर्वेषी मावक्राकविष्णामि ॥ यविगर्दः यविणसर्नैः शगिस्यविगर्नैः दमुयविदावैः शगिस्य
वैः शगिस्यस्ययनैकविष्णामि ॥ गयीकूसीनीगिवाकैः गानीः गवावनगवाः गयीकगममाजीः गवाकैः शगिस्ययनीगवाकैः
जाऊकसानामावक्राकविष्णामि ॥ यविगर्दः यविणसर्नैः दमुयविदावैः शगिस्यविदावैः शगिस्यस्ययनैकवि
ष्णामि ॥ गत्कगमनरुमुमा ॥ सर्वधर्मोपेविज्ञागा ॥ सधर्माः अथवद्व ॥ अवावनः सधर्मधर्माः ॥ ससिगायसधर्मधर्माः ॥ सस्यङ्ग

[illegible]

वग वसुधैविद्यकायाएवग वपुर्वेडागम्बरवग वयनार्यसुवर्णयलासाक्रमः स चन्द्रवाजसूबाः दक्षसदमावद्रफ के
लमस्तानीसत्वानीमथोयः विवेकं म्हायुषव वग ॥ नवक्रियमन्त्रधीयेत ॥ सत्ताश्रमैः सुवर्णयलासाक्रमः स चन्द्रवा
जमृगयशा धिनिन्दकेज्ञानस्मृष्टीभित्तुरय ॥ पुष्पावनश्चरवय रयनिकेयन्यास्कर्मणा विष्ट क्रोयः ॥ अनागमे च
न्यनेककल्याकाटिनियोगभगसेदमाव्यविष्णो निदिबः मानव्यमानिसुखान्यनरवय ॥ गथागगसमयधनगगाश्च
रवय वनागग चनरुवासत्यकर्तव्यमारेसमुद्धवन सर्वनवकगिर्यज्ञानियमसाकड इत्यानिवाखनेन सम
धिन्नानिरवयविशि ॥ ... ॥ सुवर्णयलासाक्रमः स चन्द्रवाजसूजी जयाया विवक्षानामदादभा ॥ १५ ॥ नमस्तुत्यरगव

वल्लभसुमगलसागवर्धे प्रयः कनकगिरिविभक्तकन्दनावरणमभियस्तथागगणार्दनं श्रीमयकर्मवृद्धस्य नमस्तस्मा
 नकः शुभेभाटिनियवगगदमः सुमर्तकगगनीयस्य ॥ अकमनस्तथागगस्य र्थधर्मोत्का कलागे ॥ नमस्तस्यायन्निमि
 कयर्थधर्मः मगल्यसम्यन्त्रया भागिया मरुदद्या ॥ ममस्तस्यायन्निमिगनुचय ॥ समदिगाया ॥ अत्रस्य ॥ अनेनस्य
 नः कलेनगेनसमथनः राजावददः ॥ पश्यस्यविदकगात्रविचारिषिकस्यवरायः ॥ उकिटिगस्यैवमगदवायग
 ॥ अस्मिपश्यदवदुसमर्थः नामवाजभर्तु ॥ यत्तयायवमसिचारिषिकमवराययविषिगनरपिगुवाङ्गाववन्दुकगा ॥
 सकान्दइकृस्मिन्गनमयादवदुसमथनवाजभर्तुनावेभगिवर्षेसुसुमातिवाजर्तुनकविर्षवद्वधनालिजानामयर्द

[illegible]

[illegible][illegible]

नीविषयस्मिन् रससर्वे दयवाजाभ्यस्तु निवयस्यन् । अश्वसिकाश्चर्यं नाजाश्च धर्मपदमाभिगठानविधेयश्चर्यं नाजाद
वगाः कापयिष्यन्ति । दवगानीयविकावादि यथास्यविनयमि ॥ अश्वसिकाश्च धर्मधर्मस्य विषयेयश्चर्यविषयिकासाथसीकन
हानीवः वागनाकसमर्यः पुक्यमिचदवन्तु उयश्च निवदवगा ॥ पुल्यगदवगादाहः सवयथाभकमिदुमि ॥ ॐ द्रविशं ग
संयफामि सुता रावाथसगनवा ॥ प्रियं राय्योविश्यावाः पुयगददिगाथवा ॥ उक्तायागारविषयिकः पुमिस्योक्तयेवयपवव
कुरयवापिदिरिकवधनेरमीः प्रियामाग्यामीयन ॥ इषियमुगजगवयशाः सुगरीकृपिस्वारीकवाग्यो विविनः यवस्य
द्विषयिकः कुरीगधनानिवा ॥ दसदसुरनिषयिकः अश्वसवयवस्यन् ॥ विवादाः कलदाभासारवनिविषयस्य ॥ गदः ॥

यविगवाकावाधिरुवमिदावनः अश्वसिकारविषयिकः दक्रिमायासुदनदी । अनाग्याः यविषदधेवरन्यास्याय अस्मि
कः अश्वसिकजनपुजारविषयिगदगदी ॥ अस्मिकनाकं सुत्तानानिगदारवगिध्वी ॥ अश्वसिकजनगसमानी अस्मि
कानाकं विगदे । ययस्यपुक्यननक्रयजलवायवः ॥ ययोरुदविनस्यनिः अश्वसिकजनागदः सुदमवसनीउय
सत्ताउः ययिदीवसः अमयजनसमानः सगजनविमानगा । ययसुदरविषयिकः इरिक् सगनिमदी । दसभस्यवसी
जमीनरवनिगदनेव रश्मननवसः ॥ सत्तेरनिविषयस्य रसधवातिमस्यनिवनिषु लानि विषयपिदि ॥ यदी
गाभ्यरविषयिकः मिककदकनवययवयानिगवानिः कीजहास्यवमीनसंरावय रविषयिकः अयामभगवा

कलशमानीयकला नार्कसिखला ववसंक्रयग। नगथापी वयिष्ठाकिः भवीप्रदिय धागव थाइवर्जसत्ता रविष
निःसत्तासमाः सइव ताठवर्ग लउमरु क्रमफि नोसादयनिगवसर्क वायोसमसर्क नसर निगदकव ॥ दीनवीर्योनि
सत्तानिरवकिविषयवव सत्ता रविष्ठाकिः वागाकानावायाधियुपीकिमाः गरा रविष्ठाकिः नक्रयानीना वाकसंरवाः
॥ अभासि कार वडाजा प्रधर्मयकसलिगठा वे धाक विव धानिसर्वे साकमसुली मनक दाइगा दाधारवकिविष
यवव यदायकलिग वाजाइरुकेसमयक्रम यमकयोनवाजा वेद वेदु रि वधिस्तिगठा वे धाक विव धानिः सर्वे साकम
सुली यवव कदाइ गा दाधारवकि विवयवव यदायकलिग वाजाइरुकेसमयक्रम ॥ यमकयोनवाजा वेद वेदु रि वधिस्तिगठा

नगत्तागि वाजलईरुकेसमयगः साकगानायययनः सर्वदवसत्ताय वइरुकेनगाक निःसत्तागिर्यज्ञवकेसव ॥ ययगिअ
दववनायागयगिइरुकेगा यदाय जकग वाजाइरुकेः विषयस्तिग ॥ पिरे सादेव वाजानीः रुवगसा धनाधिक गानगरुव
किपुयलन वाजलईरुकेरुवगः यदायिसत्ताग कार्ये आथे वयिसयावने ॥ मसादेधिकग वाजादेवे मनजलसय वइरुकेगानीअ
मनाथयसगानीय वरुकेः इव धार्मिकसत्तानी विजाकं जनकाचपुष्टासकग इरुकेगानावकमे सायठयभीधः विषाकरुसद
अर्थकरु वाजाइरुकेयगः अथिस्तिगोदवगगोदवे वनमादिकः सात्तना यववाथेय धर्मोयविषयस्यवदमनाथेयवादा
समगगायजनस्यवः यजव वाविगवायः धर्मोयविषयस्यव समावाधर्मोयवित्ता जानकसमयक्रम नवान्यसाइरुकेनालविषः

यस्मिन्सदावृत्तं भयं च भयं समस्तं न भयं कानां निगूहं रयारुवनि भयं नि विषयं सिद्धदात्र ज्ञे ॥ विलम्बकं रगदा
वै गे अविमदास वधय कृष्णनिदं वै विवर्ण भाम वा सयं विषसा ४ सर्वं रयारुवनि विषयं यदि रयसा दासमप्य
स्याम कृष्णं दमपाय कानि माः । धर्मोपा सच्छु दार्ढ्यः माया धर्मो स मायलया ॥ आ विमरु पन्थि उमा पाय
पविगारं वरु ॥ वै धु जन पवनं सर्वे वा य जन पवनं कयकार वदा जासाय कय विगार वरु ॥ वै सा कर्म
यत्र पग शसा धर्मि कान प ४ रययिष्मनि द वदा सुययिष्मरु नयत्र अस्य दीपय भस्मा कयया धर्मो सठ
४ धर्मो स भयं वा द्यं वा जानं ४ सुप्र रयिगा भयं नाराणि निदं वदा व कर्तव्यं न क विषयं ॥ सम द्धनि न क जानि रयसु

यस्मिन्सदावृत्तं भयं च भयं समस्तं न भयं कानां निगूहं रयारुवनि भयं नि विषयं सिद्धदात्र ज्ञे ॥ विलम्बकं रगदा
वै गे अविमदास वधय कृष्णनिदं वै विवर्ण भाम वा सयं विषसा ४ सर्वं रयारुवनि विषयं यदि रयसा दासमप्य
स्याम कृष्णं दमपाय कानि माः । धर्मोपा सच्छु दार्ढ्यः माया धर्मो स मायलया ॥ आ विमरु पन्थि उमा पाय
पविगारं वरु ॥ वै धु जन पवनं सर्वे वा य जन पवनं कयकार वदा जासाय कय विगार वरु ॥ वै सा कर्म
यत्र पग शसा धर्मि कान प ४ रययिष्मनि द वदा सुययिष्मरु नयत्र अस्य दीपय भस्मा कयया धर्मो सठ
४ धर्मो स भयं वा द्यं वा जानं ४ सुप्र रयिगा भयं नाराणि निदं वदा व कर्तव्यं न क विषयं ॥ सम द्धनि न क जानि रयसु

क्रिययमनार्यः पर्व २ म सुनयन्यकमासाय एत धर्मकार्यविमार्गमो र्थपियं विविगं गृहं मनै क ल्यां रयथा पर्वक
 ल्यः श्रियेनियम वत्तमि शिष्यसूत्राय भामेनेयविद्वगस्यः सुगमस्यगस्य ॥ स र्म र वानावरुववातासः चक्रवर्तीय
 रुक्षीयन् ग्वत्रासमययोनिसदीप आसग ॥ विनेच द्यायायववाउ धनीयः सुकोवरुवगद वाउरुजव भवपुन
 वद्वगुष्माकं ग्ल्यात्रला वरीयभ्यगिः धर्म एत र्दक्षिणैः सूर्यमथववि शीरमानैः यकाभयनमिमस्य वाउरु ॥ १२
 प्रादिद्वद्वभ्यवरुवाजाः प्रागिरुट्टसर्वे ग्नीवमस्या ॥ अरिनिहर्तुं वाउक लानिहृष उयसीकमी भवकस द्यममी
 कनागियजीविन आयकानीव ला वयययुगिः धर्म एत क र कवालिशिरु विरुवायसीय ४ वेनै वत्त वरीयानामय

[illegible]

सनय १२०० धर्मे यन्म सुदुमनके नानाविधिष्वप्यप्ये वन्दे ॥ अथाकिं प्रजापतयदासनीवः दवाश्च नागश्च किञ्च वाश्च यद्
 त्वमदात्र गम्य नाग्य ववे यष्य ववे तस्या वकी न गिय दासनीव ॥ अथिनि जानीश्वरस्य सुकाटीयायः अगमादवरु वाग्य
 कामाः अथिनि कुमिल्वं वगनाञ्चरीदि । अथाकिं प्रथानि वसात्र यष्ये ॥ सावापित्र त्वाञ्च यधर्मरानक ॥ स गान गम ॥ अथि
 वरु या वगशा उपरी कमिल्व गदासनी दिक्का जहलिरुत्वनमस्य गय ॥ दवन्दु दवानिय दवगानि सावात्र वय्य ववे यि मिः
 अथिनि यारु यगम सदासनिः पुवा दयनि सिगा अन्वोक् अथि वदित्वा वसनी मिषकात्र त्वाञ्च योकि ॥ ४४ सधर्मरानक ॥
 अन्वस्मिन्नि दवादि न्मासु अथिनि या वद्व सदासनी कोटियः ॥ सर्वसत्त्वानकपी अनित्याः वदिर्दसम पाद यत्त वाङ् अगस्था

१०

यिसर्ग वस्य पुकर्म सुयमिदं गदकव ॥ कणा जहलिरुत्त्वकि दित्वा जाः न काय वायामन मोदिग ॥ सधर्मो वगम्य पुमका
 नक ॥ अथिनि सुदुमन्य वरु वकाय ॥ ४५ मस्य सप्ययः यउ नार्थसर्ग वा वाङ् गद वा वाङ् गदक वम ॥ ४६ अथिनि कामानि वा
 उ वत्तसत्त्वा ये दगापुमि धिव कव ॥ ४७ वषु अद्य ॥ रुजस्य दीय मसफत्र त्वा नि यरुष मा नि ॥ य व दसत्त्वा ॥ ४८ वत्तजाम्बुदी
 यमिदिगाश्च वीष्मनि मरु धनाश्च ॥ यउ वदी यष्यः य वीष्मनि मफानि त्वा नि गदक वन ॥ कयव सावात्र वरु कुलानि
 अन्यान्य कानि वसमानि ये वद वरु वगी वाङ् सरी रवश्चः वत्तपवयोः अलु जाम्बुदीय ॥ वत्ता विदीपानि सत्त्व दसु नि यो गीय
 त्वा नि दव मासना ॥ अद्वयस माक मनिस्त था गम ॥ ४९ सरी रवानाम वरु वाजा ॥ यिन दम म्भु क वसु धवाग द ॥ वत्ता विदीपानि स

वत्सपुत्रः अक्राय आसीसगधगम्यः वत्सव्यारिः सधमेरायकः शायनास्य वाडस्य मसीरवस्यय काभिर्गः सगमिर्द
नयः यत्सगमीसुवमिर्दगदापुत्राः नकाग वायासनमादिनीयग नैवमश्चक गलेन कर्मका भागान् मादनमग्नः सुव
सुवर्गु अगपुत्रसकृच्चैः सत्ये कार्यपियदभर्नैसदानय नारि वासकन कानकदभर्नैः वगिकवयवसदम काठिनी न
वानर्नवगिसदम काद्या कल्यानरु वन्यः वक वकीः अनेक कस्य भयसदमाय लोदवा रुखीसयानरुर्गैः अयिकिया
कस्यवरु वभकेः गये वव म्भुय भानमानसाः अवागिगमदभ वसापुमया यवीपुमानीन कदायिवि द्यनः गभापुमा व
वद्रुपुत्रकः अयत्सगमी वान्मादिगकु यथारिया यनमि वाधिपाफा भासदम कयं चमयादि सधुमिगि ॥ ॥ स

वर्गुयरासाक्रमः सयद्य वाडससीरवपयि वक्रानामभ्युदगः शायः ॥ १५ ॥ अथिश्च मदादवीगनसाधः कस्ययवाः क
सद्विगावाः अगीगानागगपुत्र त्वन्नानीरगवगीः अथिश्च मरुगीविपूलाविमीः सवीपकवनेः वकी कुरु कामः श्यागः अ
गीगानागगपुत्र त्वन्नीः वक्रानीरगवगीः गरीवै वक्राणा वनैयवि अकु कामारवगः गनावभ्ययपदः अविदायवाः अत्रय
यदः अवायथयीः सवर्गुयरासाक्रमः सयद्य वाडः अय कागगिनायिकिकवि रुनाः विवदिगः अगमयीः सवर्गुयरासाक्रम
मः सयद्य वाडः अगव्यः अथवसः अथानिममवाः वः रुजस्यामाययामी यविपयमानरुखाः वसयापिमिमी गाथा अराव
॥ यच्छेत्सर्वे वक्रानीः पूजाकुरुमविक्रिया गरीवै सर्वे वक्रानीः अयवै यजानिर्गु ॥ सर्वे वक्रायसी कस्यवि द्यनैः सयनैः

आयावदभीयमः सुगं सव सुयरासाक्रमिदं ॥ अविशि यमिदं सुगं मननगुमागव ॥ भायकं सर्वसत्त्वानीमनक ३४
इयसागवम ॥ अदि सुगुस्यय म्यामिः ॥ अधमो निधवंग था ॥ अमिगीरी वसुख्यः म दमानस्यनविद्येन ॥ नगं नवउमयि
वनधवयनसागव ॥ नवासवगलसुसुविदिकु का पुमा कगी ॥ धर्म धावुय वरा नय व छ दीग दन ॥ ययधमोत्त
क कुर्यी गरी व सुपुगि विरी ॥ गये वरुय मया सी यथ सा अम निदिनी ॥ ६० दीसुगं का मनी मना ॥ नस्य वमये ॥ आवं नि क ३२
त्यकाद्यावे ॥ अमी विनिपादि यमान स्य कथ्य वसु इयानि अन्न रुयगः यदा स नय विजानीया यय सु ॥ नीयग ॥ नयम विनि
यम धी पयस्कं धसमाजिरी ॥ अक्रम धाऊ नगरी यरुम ग्रा इव दा व गी य ॥ अक क निउ सुगं स दग व दना रु गी ॥ समग वपु विस्त

स्यविदा वं लय नग था ॥ अपग रु मिया यानि सर्व ३४ स्य प्रसक जैः गरु नक्र वपी णव का इवा द ग हा व च समन पु विष्ठ
स्य सर्व लुकि य आ मरु वरा द गमा मनी ॥ अक कुर्यी गय मस निर ॥ या द न नाग वा ऊ अ द मिगः सुयि ना क ल्य र ग रा सनाः
य विस्त स्य ॥ ६० दीसुगं का का भयग ॥ लिदिवी वा य य व वरु य य य य वा पु या ग ॥ अ व गी र्या मना द वः अ न्य द ग ग गार व
ग ॥ इय न क या गि हा यो निः मया स न गे गानि वः धर्म रा च क रूप क क दायि रु गु इ म्य ग ॥ क दायि रु द क व र्य व वा धि स ल क दाय
न र मी क रु द व य कः क विस्त रु मिय रु था ॥ क विन से ये य व पा नि इ म्य क न य आ सना ॥ क विस्त व ल म रा स ॥ क वि द व ग
द मनी र म द रु ना रि इ म्य कः य न म्य क न व आ य व ॥ सर्व व स सिद्धि क रीः य न र्क द क ना मनी ॥ धन्य मार्ग ल्य स स नै स ग म क उ

या वदं रजसू द्वायमिदं सर्वं यन्मायया यिषीणि ॥ सर्वं यत्रियवस्तु सन्निजिगा शक्तिः सर्वं यानि रजसू ४ सदा रजसि सर्वं
याय विजिगृहास दायिजिगृहं गम गमि यावत्स यमादगी ५ यन्मन्त्रास्ति यन्मन्त्राश्चः साक यत्साक येव यत्तज्या निश्चय
क्रय ४ संजयश्च नवर्षे रं अन्नवग फानाश्रय ४ सागत्रश्च गये वयः किन्न वन्दास्त वन्दाश्च गवः ७ द्रुश्च गये वयः नगी
श्च यम इवी कृत्वा सद्यः देवगानि वः देवगानि य एजयनिः धर्ममू एसायि निर्य एरुर्मिगा रविष्ठा निदृष्टा सत्वा ४ सत्यो वयः
शागत्र वयि नयिष्ठा किः देव द्वास्त व उरुमा ४ देवगानि स रविष्ठा निदृष्टा सत्वा ४ नगा यश्च यम इवी चिः रजसा ग्राय द्यसा वि
गी ५ उरु फक गलस सन ज्ञमगा स्तन यो र्देय यो र्मे स र्ग गरी वी अव चाय स द्य नगा ४ अविनि ययसा देन धर्म

मुख्य सांगे यवार्नगं का प्रनिका सा फः नगं सन्दिगं कया आ नगं गरी व धर्मो चं स धर्मो वसलाजिन श धर्मो धारुः
 यवराजयः नययुविगनिय ॥ यश्च चिकिर्मी सूर्यं यत्रा न्यी आवयुनियव द्वा ४ गगं सूर्यमानिगलि सपर्वयडिगा वन
 गनकूणसमस्तनः ०० मी सूर्यं च चिकिः सर्वदववा ऊडा ४ सलसगी गये ववरागी श्वगवनये वगथाः वाकुमदादिगा था यक
 गगं सूर्यमलि ४ द्विसारिमदा वसे वगपी वका कविषां निः दिव्यना जी वनादि गं गामदा वसे वयकडे नावायनम द्वा ४ ॥
 कृष्णविगंगि श्वप्यन्यसी ऊयुयमस्मानिय रऊक गगं सूर्यमलि ॥ अद्विमहिम दावस ४ गी वका कविषां निः सर्वगा सूर्ययव
 ॥ वज्रयानियक ४ यक ऊक गगं वयि ॥ सर्वारि वाधिसत्वारि ४ गपी वका कविषां निः ४ मानिर न्यश्चयक ४ यक रदक ये वय ॥

कृष्ण वाचकश्चैव विष्णु सत्यमहावत् ॥ न के कथय कृत्तु ॥ यद्वै कृत्तु मर्गः ॥ कृष्ण भागवती वक्ता कविष्णु कियति ॥ सुखमिदं नमः ॥
विष्णु सत्यमहावत् ॥ न के कथय कृत्तु ॥ यद्वै कृत्तु मर्गः ॥ कृष्ण भागवती वक्ता कविष्णु कियति ॥ सुखमिदं नमः ॥
यद्वै कृत्तु मर्गः ॥ कृष्ण भागवती वक्ता कविष्णु कियति ॥ सुखमिदं नमः ॥
कृष्ण भागवती वक्ता कविष्णु कियति ॥ सुखमिदं नमः ॥
यद्वै कृत्तु मर्गः ॥ कृष्ण भागवती वक्ता कविष्णु कियति ॥ सुखमिदं नमः ॥
नमः ॥

सविष्णु सत्यमहावत् ॥ न के कथय कृत्तु ॥ यद्वै कृत्तु मर्गः ॥ कृष्ण भागवती वक्ता कविष्णु कियति ॥ सुखमिदं नमः ॥
यद्वै कृत्तु मर्गः ॥ कृष्ण भागवती वक्ता कविष्णु कियति ॥ सुखमिदं नमः ॥
कृष्ण भागवती वक्ता कविष्णु कियति ॥ सुखमिदं नमः ॥
यद्वै कृत्तु मर्गः ॥ कृष्ण भागवती वक्ता कविष्णु कियति ॥ सुखमिदं नमः ॥
नमः ॥

[illegible][illegible]

महिषीशतपथे ॥ सवर्षे च लोकवर्षे च धनसिख्यं गंगा इह लील्य कसद्वद्धा सा उत्पत्य गः विद्याय वदा सम्यग्ने ॥ स गंगा
कविद्वन्द्वः प्रवृत्तयः सवर्षे च लोकवर्षे च धनसिख्यं गंगा इह लील्य कसद्वद्धा सा उत्पत्य गः विद्याय वदा सम्यग्ने ॥ स गंगा
च गंगाया द्दिगः सम्यक्सीद्वद्धा सवर्षे च लोकवर्षे च धनसिख्यं गंगा इह लील्य कसद्वद्धा सा उत्पत्य गः विद्याय वदा सम्यग्ने ॥ स गंगा
च कः ॥ गंगाया द्दिगः सम्यक्सीद्वद्धा सवर्षे च लोकवर्षे च धनसिख्यं गंगा इह लील्य कसद्वद्धा सा उत्पत्य गः विद्याय वदा सम्यग्ने ॥ स गंगा
लोका उत्पत्य गः ॥ यावत्कस्य सवर्षे च लोकवर्षे च धनसिख्यं गंगा इह लील्य कसद्वद्धा सा उत्पत्य गः विद्याय वदा सम्यग्ने ॥ स गंगा
गर्वकस्य भासनस्यानदिगस्यायं नृप्य एव दानकः ॥ गंगाया द्दिगः सम्यक्सीद्वद्धा सवर्षे च लोकवर्षे च धनसिख्यं गंगा इह लील्य कसद्वद्धा सा उत्पत्य गः विद्याय वदा सम्यग्ने ॥ स गंगा

[illegible]

[illegible][illegible]

सहस्राक्षि साउल्यल्लभः विशाव प्रमर्षयन्ताः सुगन्धा साकविदन्तुवाः पद्मपद्मसा प्रथयः भासा प्रादवानीकः मनसा
नीकः दृष्टारगवन्तः ॥ नवीनक रगवीसा वाधिसत्वसमययाः कलदवगामगदवावन् ॥ अस्मि कलदवगस दमुवस्मिः ग
लावर्त अस्मि गदकैक गलमर्तः यस्य कगल इयविगला दवगानि कलनाकवग जी वा ऊयमस्मानिद भदवयस दमुनि
ः प्रयदियुयैवि भरवनानिदः धर्म न व मा या पर्त कुमनि ॥ नगपी उयाजी सत्य वृषा जीः ४०० द वाधि व्याक ननै ॥ १२
लासदम वचनकलः दवगे अस्म सवर्त यरा साकमस्यः सुखे न्वा ऊयानिके विवि का नयीगिः प्रसादयगिल्लयार
वनि ॥ गानविमल वे प्रयसदृष्टनयवि ॥ ४०० विरुनः समलागगा रुवनि ॥ विमलविपुल विमल ॥ गगनकल्यसदृष्टनग

विमलविपुलः प्रसादवसमला गगारु वनि ॥ अयविमिगवयस्यस्य श्रीः यविगदीगवकारुनि ॥ गावर्तय दवगः कलना
कवग जी वा ऊयमस्मानिद भदवयसः सहस्राक्षि साउल्यल्लभः विशाव प्रमर्षयन्ताः सुगन्धा साकविदन्तुवाः पद्मपद्मसा प्रथयः भासा प्रादवानीकः मनसा
नीकः दृष्टारगवन्तः ॥ नवीनक रगवीसा वाधिसत्वसमययाः कलदवगामगदवावन् ॥ अस्मि कलदवगस दमुवस्मिः ग
लावर्त अस्मि गदकैक गलमर्तः यस्य कगल इयविगला दवगानि कलनाकवग जी वा ऊयमस्मानिद भदवयस दमुनि
ः प्रयदियुयैवि भरवनानिदः धर्म न व मा या पर्त कुमनि ॥ नगपी उयाजी सत्य वृषा जीः ४०० द वाधि व्याक ननै ॥ १२
लासदम वचनकलः दवगे अस्म सवर्त यरा साकमस्यः सुखे न्वा ऊयानिके विवि का नयीगिः प्रसादयगिल्लयार
वनि ॥ गानविमल वे प्रयसदृष्टनयवि ॥ ४०० विरुनः समलागगा रुवनि ॥ विमलविपुल विमल ॥ गगनकल्यसदृष्टनग

संज्ञायगत्रेविसेववित्पत्रमयेऽयदासीकनकालनगेन समथनत्रलमिश्रीनामगथागमाइदतीम्यक्यवच्छासाकेउत्यन्न
थविशायवनसंमयेनऽसगमासाकविदनरुवऽयद्रवदस्यसावधिआसादवानाईमनूषासाकेवच्छोरुगेवा (गेनइवसयनऽ
कलदवगेकालनसमथेनगस्यरुगवगात्रलमिश्रीनीसुअगगस्यार्दकऽसीम्यक्यवच्छस्यपविनिर्देशस्यसद्वर्मेपुगिनयक
वक्रमानसुवध्वनराशनामवाजावरुवधर्मिकोधमेनवाअयालयमाननावाय्यसमागपिठकल्यऽसर्वविषयवासिनी
सत्यानी॥गेनइवसयनऽकलदवगेकालनगेनसमथेनगस्यवाइऽसुवध्वनयुरुस्यउटिश्रवानामअथीवरुवध्वऽ
विकितकऽयवमधायुष्मलऽअथीनी॥युवध्वमसुसमत्वागगावरुवगेनइवसयनऽकलदवगेकालनस

सथनगस्यउटिश्रवानाअथीनीनाइलवाइनीनाअथीनीउत्यम्रावरुवारिबपादिकायर्गनायऽयवमयागुरुव
इयकलसगयासमत्वागगनानाआसुक्रमलऽसर्वमसुगगिगगीरिषिमइयागगनाकगलऽसर्वमिस्यावरुवगेन
इवसयनऽकलदवगेकालनगेनसमथेनगस्यवाइऽसुवध्वनयुरुस्यविषयइनकानिसलऽगगसदुमाशिनानावाग
एछान्यवरुवनानाआपिपिपीठिगानिइऽअगीवाअत्रीकदकाममनापीधदनीधदनावदनि॥गेनइवसयनऽ
कलदवगेकालनगेनसमथेनगस्यउलवादनस्यअथीनीयस्यगीमीमनकमीसलऽगगसदुमासीनानावागएछानी
नानाआधिपवपीठिगानीसलानामअथयवमकावर्ध्याविक्रमत्यववरुव।गुगन्यनकानिसलभयससुमाशिनाना

लाग्ये छानि नाना व्याधिः पविषीति गानिः न गदिह ॥ १ ॥ श्री गी पात्र वी कट्ट काम म ना धीः वेद ना व द य नि ॥ अर्य य म म
 यिगा ऊ टि भ वः ॥ २ ॥ श्री वेद्य वि कि ल क १ य व म भू क भ ला ॥ ३ ॥ व्या ग भ य वे द्य भ सु य म म ल ग ग व द्वा ऊ र्गु म रालः
 को १ य ग ग व य नू पा फा डी र्गुः म व के य प य म न का याः य कि मा ल न्याः य य य स र्वे ग म न ग व नि ग म वा य व
 उ धा नी यः प र्म क म गि ॥ न ग न्य व कानि म ल भ ग स र म निः नाना वा ग के छानिः नाना व्या धि र्गु ४ य वि मो व यि र्गुः य व
 न म रू मि म भे व यि ग र्गु उ टि भ व म प र्म क मि त्वाः व्या धि को भ ली य वि र्गु क र्गु य र य न भ भु को भ ल्य न य वि र्गु य ना र्गु
 स र्वे ग म न भ व नि ग म रू न वा यः वा उ धा नी य प र्म क मि ष्या मि ॥ न न द्य स ए न क ल दे व ग का ल नः स म य न उ ल वा य

२०

न १ ॥ अ धि य य न स यि गा उ टि भ वः ॥ २ ॥ श्री ग ना य उ ग म ४ ३ प र्म स पि र्गु उ टि भ व स य पा दो नि य सा व दि त्वाः क ग र्गु र्गु सि य
 ठा रू त्वा न काने स रू ॥ न काने मि गा उ ल वा रू न ४ ॥ अ धि य य १ स यि र्गु व उ टि भ व र्गु मि नी र्गु मी न थ र्गु भ भु को भ ल्य
 य रू मि स ॥ गाना नि नि स क न य वि र्गु मि भ भु क ४ ॥ न काल न जा य न व्या ध य म्भ भ वी व नी ॥ रू उ न र्गु य रू काल
 स र्वा व र्गु र य ना क व म र्गु य स का या नि ना य रू न्य ग र क र्गु वि कि ल क रू क्वा वा गा यि र्गुः ॥ ३ ॥ अ धि य य स नि या न स म ल
 न्न क र्गु व्या धि य म्भ क र्गु र कि का ल क य गः वा ग यि र्गु क य क क दार कि का ल क य गः ॥ ४ ॥ अ धि य य न पी उ कि मा न वा भो ज्गु य य स
 उ टि भ वः ॥ २ ॥ श्री उ ल वा रू न स य अ धि य य स र्गु र्गु मि नी थ र्गु भ भु को भ ल्य वि दि त्वा द भ य ग स ॥ य र्गु वा य र्गु य म म ४ ३ यी य

[illegible]

कृष्णगिजीयमाने ॥ वागाधिक ४ कृष्णगिजीयमाण ॥ १०० श्रवण श्रुतिगयय कायशासक र्गर्भकृष्णनि जालकस्य विप्रय
नेयिकृष्णिविद्वनके ॥ विगुहाय यन्त्रवगधसन्नियाग ॥ युगमर्क कृष्णाल्पवर्षमन्त्रवागाधिक ४ यन्त्रिकसन्नियाग के कलाधि
के सर्वसुजाति गयी ॥ यत्की नय श्रुत्य दान्तर्यवगधनया नोषधियन्त्रिक यामिनि ॥ अथ श्वलजसवाहन ४ अक्षियुक्त ४ गेने
वद्रयमनेमिके कन श्रुत्य को मलयनिष्ठ नसर्वोष्ण गेयये दमाधिगनी इरुग सगनश्वलयन ४ कृष्णदेवग कासनगनसम
यनजलवाहन ४ अक्षियुक्ता वाहु ४ सन्धवयुरस्यविषसर्वग्रामनगनिगमकुनयदवायु जाज शनीषयसे क्रमिन्वा सर्व
वीसभक वीसलस्य मायी नानाशोग ४ यत्की नाना वाधियानिगीणिगानाम वमाश्वासयामास ॥ माहे व ४ यस्मिन्ने शास्त्री नि

वायव्यस्य दानानि वददुनिष्ठाः पृथगानि वददुनिष्ठाः। जलवायव्येन ४ अक्षिदात्र का मया वेद्य दानानि वः सख्या नीत्याधि
विधिकेत्तु कानि यः दपुण्येन वाधि सत्त्वेन रुविगयी। सर्वेषां यैवेद सधि गकारुग। यत्तु खलुपन ४ जलवायव्येन
अक्षिदात्र कस्य जलायु गरीनामल यौरुग सग्याः सत्त्वेन ४ कलदवर्ग जलवायव्येन ४ द्वादात्र का पृणवरु यगी। न
काजलायु वानामद्विगि यो जल गरीनाम। अथ खलुपन ४ कलदवर्ग जलवायव्येन ४ अक्षिदात्र का मया वेद्य दानानि वः सख्या नीत्याधि
नृपक्षे सत्त्वेन गत्र निगम ऊनघद वायुः वायु क्षानी यन वैक्रमेण। अथ खलुपन ४ कलदवर्ग इयत्र न का लन सत्त्वेन
नः सत्त्वेन जलवायव्येन ४ अक्षिदात्र का मया वेद्य दानानि वः सख्या नीत्याधि

किंनः गीदिमं भावनि । यथाह वीकात्र जट वीसंर वापस्क निमी । गट्ट कगशे गदरुक् । कणा थमिसमा सरकाह
कण्ठ गलाका कर्पाकिनः ०० मीदिमं भावनि गशे गदरुक् । यन्न नीमदं गीदि नीम यमी क मयीः यमीदिमि ०० ममीसर
काश्च क क गलाः का कयकि मा भावनि । मथ खलपन ठ क ल द व ग क स वा द न ०० अकि फ ० १ न य र्वे चान्द के म न्न न
वियन्नः यथाह वीसंर वापस्क निमीः गयमी पाके भाग म दा र स्क निष्ठा । य ग म ल्या म रु सा नि य गि व स नि स । स म ग य
थ व रु नि म ल्प भ गानिः । क स वि प क्षि ना नि क या स्यः का दू म्भ वि रु म ल्प वी । गला थकी द च का यी द व गी नि म्भ म की । सा द न
वा क स वा द नी । अकि दा न क म ग द वा य ग । सा ध सा ध क ल प य ग ल्प क ल वा द नाः । नाम ल्पानी म्भ के प्र य द ॥ दारपी

काव्याख्याः असवादनं वृत्तं वाग ॥ यथायदं वाययगि ॥ गच्छनामानं वर्यं कृत् ॥ असवादनं ४ या रुकियः नीमानिदं
वगमत्पानि ॥ यवगाया ॥ पात्रियं नीदगमत्पानि ॥ सयवत्तु सयवगजसवादनः ॥ ग्रंथि पात्रकास्यरयस्या
सागयायसका प्रथयिकुमत्पानि ॥ गनवत्तु सन ४ कृतदवगसमयनाटवीसीरवायी ॥ यस्कात्रिग्यां किंकितायमवजिह्वसयकमरुगा
गानिदगमत्पानि ॥ सयमाजीरुयमयविविधानिजसयसीमानि ॥ अवगि ॥ सयकृतदवगजसवादन ॥ ४ ॥ यिदात्रकश्चरुदिग्गं ॥ ४ ॥
अवगिमा ॥ यस्यादिमिजसवादन ॥ ४ ॥ यिदात्रकश्चरुदिग्गं ॥ अवगिमादकं यवयमानानेयं वाशयकं मयसराग ॥ यरुदिग्गं
प्रक्रमसा ॥ ४ ॥ याकी जागि ३ ॥ यमदार्किकसमर्थः ॥ यक्रमरि ॥ यश्च ॥ यमभावादि ॥ त्वायेनसा ॥ विद्यागना ॥ यजगमायगम्यगेवीद

आनीमत्पानि ॥ सयमाजीरुयमयविविधानिजसयसीमानि ॥ अवगि ॥ सयकृतदवगजसवादन ॥ ४ ॥ यिदात्रकश्चरुदिग्गं ॥ ४ ॥
यै ॥ ४ ॥ यकृतदवगजसवादन ॥ ४ ॥ यिदात्रकश्चरुदिग्गं ॥ अवगि ॥ सयकृतदवगजसवादन ॥ ४ ॥ यिदात्रकश्चरुदिग्गं ॥ ४ ॥
सयन ४ कृतदवगजसवादन ॥ ४ ॥ यिदात्रकश्चरुदिग्गं ॥ अवगि ॥ सयकृतदवगजसवादन ॥ ४ ॥ यिदात्रकश्चरुदिग्गं ॥ ४ ॥
त्यगजनपायसत्तः ॥ यीदगानी ॥ मत्पानि ॥ सयमाजीरुयमयविविधानिजसयसीमानि ॥ अवगि ॥ सयकृतदवगजसवादन ॥ ४ ॥ यिदात्रकश्चरुदिग्गं ॥ ४ ॥
मनीरुविद्युमि ॥ सगी ॥ ४ ॥ यिदात्रकश्चरुदिग्गं ॥ अवगि ॥ सयकृतदवगजसवादन ॥ ४ ॥ यिदात्रकश्चरुदिग्गं ॥ ४ ॥
वायुविद्युमि ॥ सगी ॥ ४ ॥ यिदात्रकश्चरुदिग्गं ॥ अवगि ॥ सयकृतदवगजसवादन ॥ ४ ॥ यिदात्रकश्चरुदिग्गं ॥ ४ ॥

कैनिवभनैः सर्वे वगैः रुक्मिणमरिचवत्र गीद्यमयसं वस्यः पिणामयस्य अचिनः नवी वदकागावज सवादन ३५
वैवयमि ॥ यत्किं विदुः गृह इति सै स्थै राउनी स्यागः साया पिणायारु ७ रुगिन्वा दासी दास कर्मक वस्य कर्म ७
सर्वभक्तः चिन्तयित्वा उताम वस्य रुक्मिण वसवत्रायज वा रुनः नाय गार्दी विसरय ॥ अथ खलु उताम सा दा व
कः रुक्मिणमरि चवत्र गार्दी वगैः ॥ यनस्य कैनिवभनैः गनायसी कामदय कर्मोः गायक पिणामयस्याः ७ वगैः य
मास विरु ७ वत्र यथा यवो कै वस्य पिणाम रुन उताम साय विसरि ॥ अथ खलु उताम वगैः वकाग हाउनी रुक्मिण
वै वस्य नायगीः रुक्मिणमरि चवत्र नाटवीसी रुवायुक् विद्या गनायसी वसग ७ अथ उताम रुन ४ सर्वे यरी उताम

वमासगद वगैः वगैः दगः ७ यव स्यानि का हाउनी यगि ७ अचिन्ताः गग यस्मिन् विद्याय विरिचि निस्सा ॥ गना सा व गगानि
भमत्सम दमा विरु पिणानि रुन गगैः वगैः गग य व मका ससम यना वगैः यनः विरु मका हाउन था वयमा
न ७ गगैः वगैः विरु निस्सा ७ गगैः सस्य वस्य सै व वस्य मवत्र का ससम यना मयरी ७ यत्सगगी साउता
स्य मरि ॥ यन्न नम रुगवी मत्स्यानी गगि वी यगी यमम नादी धर्मो दभयरी ७ वल्लि सिद्धि नरु थगगाया रुग ७ सस्य व
सै व वस्य ना मयरी मयरी ७ वन वसम यन यस्मि उताम वी या वी धा वी ७ सत्ता ना मरु ॥ कश्चित् सहा हाउन मरि ७
वयनीः कश्चित् गयीनि ॥ अथ खलु यन उताम रुन ७ गगैः वगैः वसायाम री या वी जान मारीः यस्मि विद्याय वगैः

[illegible][illegible]

जागनायसी काना ४ गगनयुक् विद्यामा न्दा वयुषी प्रवर्षयन् रुद्र नवान्दहिना ४ दनवपि दवा सयि गगा ४ गगनयुक् विद्या
मगु नेवमानि सदी उनिः सपविवा सयि निः स ॥ मयगी ॥ सोरा ग्य गामनरा वनिः स ॥ उमदी यव वाणी पणगा इरुग ॥ अ
यव सवा उमसु व ॥ वयु रा गन क म म स म ग्या म् ॥ ५ ॥ कि म र्थ म म अ वा री व गानि नि मि र्गानि ॥ पाद रू गानि ॥ मे ग द
वा व ॥ य ख लू द वा उगी या गज स वा द न स ॥ अष्टि या व क स्य व त्वा वि भक्त का रा व स म् ॥ मा नि य व वि गानि नि दि द्या ॥ ६ ॥
निः व मा न्दा वयुषी व र्षा नि नि ग ॥ ७ ॥ वा जा आ द ॥ रु ग व न्का ज ल वा य न ॥ अष्टि या व क प्रिय व व न न भ का य य ॥ ८ ॥
अथ ग म क म स मा ग्या यी न ज ल वा द न स ॥ ९ ॥ ग ना य सी काना ३ य सी क म् ॥ ज ल वा द न ॥ १० ॥ अष्टि म स मा र्ग ॥ ११ ॥ मा र्ग य न

वाजासूत्रं च यस्मिन् नायकः सः ॥ उपसंक्रुष्य कान्तिनिष्ठः ॥ वाजायुः ॥ निःसर्वादन किं निमित्तं जानीयाय इत्यत्रा
 ॥ इन्द्रानि गुरुनिमित्तानि कानि न्यायः ॥ अथ ह सवाहनः ॥ अथ वाजासूत्रं च यस्मिन् नायकः सः ॥ जानामिदं नि
 यमं दमस्त्यस्य मरुमात्रिकान् मरुगानि ॥ वाजा आरु ॥ अथ जानासि ॥ सवाहन आरु ॥ गुरुदवजसा मरुमात्रिकान् मरु
 मात्रिकान् किं नानिदं मरुत्स्यस्य मरुमात्रिकी वनिः ॥ अथ कासगमानि ॥ वाजा आरु ॥ नर्वमरु ॥ अथ सवाहनः ॥ अथ वाजासूत्रं च यस्मिन् नायकः सः ॥ जानामिदं नि
 यमं दमस्त्यस्य मरुमात्रिकान् मरुगानि ॥ वाजा आरु ॥ अथ जानासि ॥ सवाहन आरु ॥ गुरुदवजसा मरुमात्रिकान् मरु
 मात्रिकान् किं नानिदं मरुत्स्यस्य मरुमात्रिकी वनिः ॥ अथ कासगमानि ॥ वाजा आरु ॥ नर्वमरु ॥ अथ सवाहनः ॥ अथ वाजासूत्रं च यस्मिन् नायकः सः ॥ जानामिदं नि

त्रिभुवननाथ उवाच ॥ मायसैकमयं दयमना निदममत्स्यः स रुमाजि कालगमसु नैवमा न्दाववपुष्यवर्ष इच्छाः एनवधि
निदरु ॥ यिमुवमकदवायम् ॥ कालगमनीयथ उवाच ॥ दन ॥ अष्टिजलाम्बवस्य दावक स्यान्नि कादिदेववनीम् ॥ का
यनवाजासुवभवयुक्तनायसैकमोर्गीयुक्तमिमा नावयमिस्म ॥ यत्नलदवाजा नीयाकानिदममत्स्यः स रुमाजिस
कीनिकालगमानिः दवयुययिभत्सययनानि ॥ गवीदवयुगाभी मनरावनाम् ॥ वाजावीहानिः ॥ गुरु निमिगानिगानि रं
गुहसगानि ॥ यदसोदि गुरुवत्ताविर्भत्सकासुवसरुमाजिदि व्यानिव मादाववपुष्यानिपुवविगानिः ॥ अथसवा
जाहृदुष्टा उदग्राक्रमनावरुव ॥ अथयलरुगवात्यनका काधिसत्वसमवयीः कलदवगा मकदवायम् ॥ स्यात्तवत्तप

[illegible]

[illegible][illegible]

विमान

विमलसविविधविधगुणभगकिन्माइयुगियगहननयभनवस्यत्राकुमारगवीरिद्रुभगसदसपविद्रुगयकविधवद्रु
 प्राफषपीवासकजनपदऊनयदवात्रिकावभोमाइन्यगमवनरुहमानकाकावरुवः॥सगयदभद्रविगमइतीसम्भद्र
 लमत्रविविधकसमपुगिमजिगीययिदीयुदमीः॥छरुगवायकाकमानेमासनुयकेसा॥रवभायमाननययिदीयुदम॥
 अस्मिंशस्मिंककाननिष्ठासीहायके॥नगदिगयगगस्यासनीः॥यहाययसगमनरुगवगेआ॥इयासनीयहाफी।पुङ्कफी
 ॥यहायवरुगवनममदवावग॥पुङ्कफमारीनंरुगवनीपीकऊ॥छरुचवीववदयविष्टमीकवदयवमागः॥कअ
 विमलऊनमीरिगाय॥रुगवनिधनविषयक॥अथरुगवासास्मिन्नासनीनिषयारिद्रुनामनुयगसा॥॥॥ययरीरि
 मृ

क्रुवाइकनिकविकामाः॥वाधिसखीनीमवाधियद्वयी॥नर्वमकरिद्रुवारुगवीकमगदवायग॥अर्य॥विधवकासयाफी
 ॥सन्वाथरीगारुह॥अथरुगवानाइपीमानेदेमवुयेगसा॥विद्येनेयामानेदेमकुयी॥अथयकाानानेदेरुगवगएनि
 ॥गुपसुरीविद्यटयामास॥असीमदयीनिवगसा॥उदंससा॥रिवलीन्यपविमिगुनमिगसा॥गता॥धद्याटय॥अथरुगवी
 सयसा॥अवकयप्रमः॥विलिइवगससखसिगः॥नवकमसकासवउयाशिना॥अवनिगसखान॥वाकममनवधिका
 ॥ययिदीववास॥मनिकनकउगविकमी॥वनमसुरी॥गवागुगुगमस॥अथरुगवीनायसा॥मान्यमनुयवसा॥विद्यट
 यामानेदेनमसुरी॥अथसा॥नानेदोरुगवगयुमिगुखसुरीः॥विद्यटयामास॥सगयदभद्रकनकविहगमकासीयादि

गी॥ शिवस्य मयी समुद्रं दृष्ट्वा रुग्णं वक्रमगद दवावग ॥ एवमर्च्यै रीरुग वीरसमग ॥ समुद्रं ॥ रुग्ण वानवाय ॥ सकेन
 समरुवा ॥ सके उद्या हा नगमिनी ॥ गदा उद्या ट यामास ॥ समुद्रं दृष्ट्वा दिमक मयस ॥ अन्यस्त्री निद्रु ररुग वक्रमग
 दवावग ॥ रुग्ण वनस्त्री न्युपसक्त ॥ रुग्ण वाना ॥ अनीयगाम नन्द मदाय वसस्त्री निनी ॥ अथायमाना नन्द स्नान्य
 स्त्री न्वादाय रुग्ण वक्र दद्या याय नाम यामास ॥ रुग्ण वी ॥ स्त्री निद्रु दी त्वासीत्यपव ॥ सीमाया वाव ॥ ०० मान्यस्त्री निमदा
 युवसगुत्तमक स्य समनादमथा नक्र नियमिव सङ्ग मा स्नाय यम ॥ सीरुगारु यास्य ॥ समर्ग सागरी वी ॥ क्षेममिमगा
 ॥ दास्त्रादि ना ॥ धिमिग ॥ सदा दान निवमस्य रगारुग वी रिकु ना ॥ जलु यामास ॥ वनमरि कु वा वा धिसत्त्व मवी वानि

२३

तत्तु कथं

भासगुप्तवासिगानि ॥ यत्रम ॥ त्ररुधर्भनानि ॥ यथा ॥ रुक्मानि ॥ जगत्तु रिकु व ॥ रुग्ण वक्र वय ॥ आदर्जिग मनस ॥ रुगानि ॥
 वाना निमदा वक्रमा ॥ अथायमाना नन्द ॥ रुग्ण वक्र वय ॥ रुग्ण वक्र मगद दवावग ॥ रुग्ण वानगीगाना गगयुक्त न्यक्तः सर्व
 साका ॥ रुग्ण ॥ सके सत्वनमरुनी ॥ रुग्ण यथागग नवगान्यस्त्री निमस्यगी ॥ अथ रुग्ण वीनाय ॥ अमुमानं नन्द मगद दवावग ॥ व
 ननीयाना मान्यस्त्री न्यानन्द ॥ मत्तु स्य दगा ॥ वरित्री नन्दामि रिस्य वक्रिय ॥ अनरु वा यासम्य द्वासी वा धि वरि सव
 दमि ॥ ॥ रुग्ण य ॥ मानं न्दा मिग ॥ धन्ये न क धन धान्य वा ॥ नव सायय नो ॥ युगि दग वय वाक्रमनाम सा वथाना
 म वाज्जारुग ॥ मस्य द वक्रमा वस ॥ आसु य ॥ युगा ॥ वक्रु द ॥ म साय म दीमसा द वाम सासत्त्व वाग्धमि ॥ अथ वाजा की जा

धमद्यानिःसरिनिस्सुमगसा॥ गेवकुसावसिखाद्यानस्यः उमान्नाचिगयाः कुसमसात्तयाव ॐ गुरुगोः नविचवमानो
महादादभवनगुत्तयविविमुः ॐ गुरुसगेषकुसावायसायकाः ॐ न्यान्पुसगावखरः वाजकुसावात्तुः ॐ उद्यान
मरुणामसकिगायीगीः दादभवनउत्तयविविमुः ॥ अथमरायनादासागुरुदयः मवायः (लीर्मदयमाविग) आगक
मिमावयं ॐ पदे विनाभमापयम ॥ मरादवउवायः नमरयमसापिरु ॐ गुरुनविद्यामादिमदययवर्कने ॥ मरा २५
सत्तउवायः नवममरयमसासि ॥ नापिआकीवनवमनिकनसीरुगोः विविक्कयवमसविदलः मरायनासागुरु
दयमिमः ममसंयाइयामिद ॥ अथमवाजकुसावात्तुः दादभवनगुत्तयविविचवय्यमानो नकीयाद्यादइमुः ॐ मका

रुयसगीयकुसगयविदगीरुः यत्रिकविगायवमइवसगनीजीः ॐ मरायमादाइवगीरु ॥ मकायमियीगयसिनी
यजगुरुयसावाः सकादपुसावावविद्यमि ॥ ॐ दीनीराजनमः सरमानाससगानपिरु कयिद्यिद्यि ॥ जिदीसयावाक
सीकविद्यमि ॥ मरासत्तउवायः ॥ किमसागुयसि त्वागुजनी ॥ मरायमादउवायः ॥ मात्तागुयनिवधिवागिः वमसकाभीरु
वययिद ॥ नमराजनसकैः वाद्युगवक्रमयसि दानी ॥ मरादवउवायः ॥ ॐ दवायपुसिमादुरुयवगीगमजीवाः असी
वासावभवायवमइवलिनभक्तमनयासानराजनमवर्ष ॥ काइसा २यागयविचक मार्यः आत्मयविद्यागक यो
दिमि ॥ मरायमादउवायः ॥ विराइरुव आत्मयविद्याग ॥ मरासत्तउवायः ॥ असादिधानाइकरीः मजीवारियका

नादिनिदिद्रु के अविस्तीरु इच्छा व ससुके नाह सो नियगु ४। सुविवातीरुम पलगा ला यात्र वादु आरु स्वदीमम
यमु ४। मरुपिय राग कथार्थि वार्थः गथाऊन की सुगवत्त ला या ए कि छग साऊन नीरु नी य ४। कवा यवाणी कमला
यमक ग ४। मरुहि असा क मिरु व अरि री न नूय द भु री न जी वि री (कथं म दा स त्व विजि का वर्य दास्यः मरु द भु न
मरु गा ग या ठ म र्थ मो जाऊ क नो य दूः विवि ध क न री विल यय र कयः मरु क मा व सा प सा य का दि। मि पु ध व न ठा क रे न
मा वा ल व मा ४ प व स री इच्छा व यय कुः क क मा व ४ क क मा व ४ मि ॥ ग सि व स म य द वी भ य न ग व ग गा थि य वि पु गा यः
सु व के स पु द द भ ॥ ग द धा रू नो द नी त्या ग नीः व किय मानै र्य ४ क पा ग भा व का य वि स र मा ना रू री गा रू नः ना रि

यमाना ४ म य द वी रू मी के पा इ रु स रु द या स रु स पु गि वि दू ध वि ना य वा व रु व (कि म वा रु ग धा नी ऊ स निः धि व रु ना
कै थि नि रु मी स य्ये ४ स ता न व सिः म म व क र्यः रु री ऊ व य मि वा ४ इ र्थ क रू नि म ल भा व मिः व न य नी स ग नी कि द मी
वाः स रू मि म र्था स ग नी व न वि व र मि दः का ठ ना र्थ ग ग नी । अ र्थे वी वि न रु स रु व डी व स ग ना क रु द या पु वि म्थः ४ द्या नि
व द या मा स (४ वि क मा व य नि वा व का ४ क मा व म ल व रु (न रुः म्थ य ग ग रु रु ग म्थ व मा व द वी सी क मि ग रु द या वा का
क स न ॥ न य न रु द ना वा जा न म रि ग म्था वा व ॥ दि व न रु म पि स रु ४ म्थ य ग वा जा पि सी क यि ग रु द य ४ रु व म स रु
रू मा य द ॥ रु क रु वि म का सि म् का सि पि य ग न ॥ म्थ वा जा द वी मा स मा स (मा रि द वि य्थ र्थ व यः क मा व म ल व

आद्यमयगगासिमृग्यापुसमभवद्विवागगः। विनीगायवंममरुविष्णुमि३० दवीयमुहानुगगायकी श्रुतभावा
रुणीउवकाउयनीरुलीदुयुग ०० वमत्सा धवत्सासुसपविबर्कमानामदिषा वनवैत्ता के लखवनवः भावका
क वनक वनवादिगि॥ साकानपियसग केनवउस ॥ रुगाय धर्मा धवत्सासुसपविबर्कमानामदिषा वनवैत्ता के लखवनवः भावका
ननागगाशः पुनीमनयनमना रुवीयवका ॥ किमवा वयमिह नयना शिवासीयन्धामिरीसग वदीनिसी य ॥ २
थियी ॥ सवके रुदयमय धायमयगी धिगिमनमवाकना विरुद ॥ सावेगस्यायके स्यपीरु सीयदिन्दयुर्मन्धरुयम
यकश्चिद्विष्णु शास्त्रपानक वदोसु नोद ॥ सात्वाद्यमपियसगाना भीगग ॥ आद्यमग ॥ सत्यननायद्वगाययेवः ॥

रुमिलये ॥ कथो गेतिरि शमासयतिरि वासज ॥ ययविद्वानुका रगासुफना ॥ अथ वा जादवीववद्विष्ट्र ॥ क
मक व मयविद्वय ॥ ससिवे विवमनयमयसगाननकाथ नसाई ययसग मवावयजाकलाग सिलयिगी
युगः सुसुमयवेगुस न्यसा निगानिगत्रानि ॥ साकाननइवसपूनवा न्यः सनममयनमसासलानामवाउका मा
ना ॥ रुव न ॥ गदायिमयानैवः वागद्वयः सा सायविमकनः नवकादिशि ॥ ३० ॥ ३० ॥ ययाउगदमृग्यिगी
किइवसुयनविद्वानीसर्व दाषापगग सत्ययसी दद्व नगि॥ नुवदिनु के कसिसलस्या येकलसमययी नवके व
वाजागिः समावागविमावययी ॥ इयत्तुत्ता सावे ॥ अजगत्यविगु दीरी इत्तवमनक विधविधिगमिग्यथः ॥ रुगवांगर्याः

वसायाः मिमांसायां जरुषा १ वदुनिकस्या निमयात्तरक ४ पर्ययगा ४ ममगुवाये १ यथासि वाजायथनाजय
 मथुवयकामय आत्तराया ४ अनसुनामिये निमासु आगिष १ गस्यापिपुषामेहिग्यागवनाः मानामदासत्वयवीवर
 वदुगस्येजामीयथरागवोयः नात्रामदायवमदाय ४ वनद्वयगुगत्यानसमपुराग १ गेदृष्ट्याद्योफुधमि
 रुगागस्याग्रसत्तस्यक्यामिजागायनमासु आत्तराजयमासं नृवादिद्याद्याकृगवयोपिगाइवादयः नृगानिस्पमास
 जानि १ यमिगमसिक्तदायसमदायथसमीममदासत्व ४ दृष्टावः द्याद्योफुधम्याद्यासमीमाकममययमिनेक
 यिमसे सधवनीविदुगः यकिसेद्यविविधानिसेगुलाः मगसद्यसदाकलसं सिगारयन ॥ सासायदोमस्यजानो

१००

वः सदासुमासुथावधानवरमिमदासत्व ४ दृष्टाः गगुमदावनवप्रसि १ मगिआकमन्यद्वयाधिरनक्तिवनानववि
 सैह ४ पर्ययनिकारव १ मगुमद्वानिविचक्तिवनमधुशमीवाजकमात्रोः मदायमयसुधमदायव ४ गमीय
 सिकमिताययद्याद्यासुद्वलाभयिगाद्याद्यासुगी ४ दृष्टावधिनेसिकीगानिकेआसिधर्ममायैः धनधर्ममवदी
 ज्ञेयसिपगिगानिदृष्टाव १ यकिदितायैगसपमिगीः धनजीयैपम्यानि १ शोगोनयसमीसमदिगीदिमययग
 किः धनमायैनयमनासवयीभुवजासिफागजा १ सगीद्वियविहानमद्विगा ४ गमीययायद्याकवनस्यवदी
 दमानीआकाका ४ सिवकिगजसनीसिगाईयादवव ४ धनद्वनः १ गसिपगिगमा ४ मः साकजनिवियाग्रमसिपीव

यथागिस्तु भगवति ४ वा ऊ क साने ग मासु इय वि व का या । गार्या सुनाया को दय म के य भव मा व र्ग ४ । सर्व ग त्यादि
 सु वि वि रि वि वि रि द्य माना यिः भु मि आ के पु र्ण ह द या य वि या ग का भु के भ व वि द्य ॥ उ य र्म क मि त्या न् प मि स् दी नः
 मन सा रिः आ के स ग फा क न स र्ब वा दि मि ॥ वा ई र्म सा व थ से वा वा व ग ॥ ग न म स न य ग न न द्य आ का चि ना म म द
 द्य ग न वी र्म । उ र्ग ग्या सु न स इ ग्या पी द्रो व म य म स क म वि व न । सु वि व रि वि वि ग र्म ग पी य नि । स्या क्ता नि म स ह द यी व
 व थ या द भ नि मि र्म ने र्म य ४ य ग्या मि य र्म नी प्रिय सु गी य न म वि उ न द दा हि म स जी वि र्ग क र्म क न द ॥ स प्राम या इ व रु
 या म स क या ग सु गानि । या स्य र्म गी य म र्म क या ग सु गी प्रिय म ना य र्मः स न रु य वि व ४ । स न ना य र्म क या ग र्म क र्म । स प्राम

101

न म स ४ ४ भ आ के य वि व ४ ह द य र्मि । भ मि दा र्म आ क वि नाः स व नी म स रु वि द्य मिः वि व न य ग न म वि उ न द द स
 म स जी वि र्ग र्म य भ का व र्म ४ न व म क ग म रि पी ग म रि वा स म र्मि र्मिः म य व न ना य । स गि य य वि रि ता वि न द्य
 वि र्म वि र्म र्म म ना । स र्वा क ४ य व ग न म र्म क न स र्ब वा द मा ना ४ इ द्य गाम ग म सी वा स म र्मि र्म य गि नाः व ग य व न ना य
 स म क व आ का ल य र्म गी व या ग स्य स ग त्या वा ऊ न्द ना मा र्म य य काः उ र्ग सा र्म ग ग ४ । क मा वा मी र्म न ग वा न र्मः ना ना
 ना रु ग र्म गी कि गी ४ ग य र्म ग ग्या ग्या म र्म वा वी द मा न ४ र्म किय ये र्म म र्म स र्म कि जी वि ना वा क ग म ४ । सी पु र्म म
 सा स र्म ४ कि उ द्य म र्म म द म ना र्म । स र्म द र्म ना प्रिय म ना र्म नी वि व भ वि व ग म स र्म आ क व द न ४ । य र्म कि वि व य मि दा व

ननिर्दिनाक २५ असले पायासक टा निधाष ४। वाताम साव अल्लय वाद मान आकाश १ सिव निगलिन थ २४१ अ
 लमहीषी अवनी यय म नीसि कै मि ॥ उद केन याव ल्क निन लख ॥ उलाय य दिव दीन मान साकि म म प गादि म गाकी
 वनि ॥ वाताम हीव थ अगम हीषी व न व म व यदि नि विदि आस असाय यो घडा डिअ सा र ग गा क सा वा जी मा ल म गि दी न
 या न सा रु वा दि न घा सि आ क रु द या १ न व म सा व थ अ क मा प यित्वा ग दा ग म हीषी व के गा नि यु म वा उ क सा गा दः १०२
 वा द मा न १३ आ का रु व १ असाय ग म य वि व १ स दी न म ग सा दी न न व क थ नि यु म न ग व य व गा डि अ सा थ य वा सा
 प शा मा व रु य माने १ ग ग म रु सा १ थ ग म रु वा वा द मा थ थ य नि १ नि ग गी ड ला वा डी नी वा डी थ य १ सम न

का
 व द्या १ सम न न व नि यु गा वा ता स म सा व थ १ सम न न वा यि रु य क व थ द र्भ ना र्थ य क नि दि म गी स ला स न य ना
 थ सा न्य म व य व र्थ म छि ग म व र्थ व वि व लि जा गी या गी ना सि फ ग वी र्थ १ अ म स व वा द मा ना य क र्कः वा व न आं रु
 १ स वा डी म सा व थ ल द य १ अ म स व वा द मा ना सि गो उ द वा द म व क न १ अ थ न्य ग मा इ मा क स ल वा ग म
 मा द म वा व रु उ य सी क स न य व वा डी १ म सा व थ स अ वी विस सा आ क यि रु स ल व न य गी मि छ मि छ नि गे प ग धिय य
 म ना या १ न वि द मा ग म थ य ग व रु नि के द म सिल य रु व र्थ म ना र्थः स द रु मा क म गि क म्य वा इ दि गिया मा क्य आ
 ग म रु कं १ वा वा व की म स ल व रु या व रु १ स म उ ग वा जा न सि द म व वी दि मि ॥ दि व ग व १ म सान् थ न्द मि छ रु वा रा

[illegible][illegible]

॥ यशोवद्वानसासगसानिनीविनासरुगविशार्गवाहायिवासागल्यनसार्धद्वियारिप्रयगगमयधर्मि ॥ २४ ॥
 ययशोसगवासमदिकेनमसवीप्रियगज्जमाने ॥ वाजायिगयययथागृहीत्वायवायमानापियवावजित्वासागीय
 लवमानवपादवीज्यदभिसगययकामा ॥ अरिवसायकमनिसुधगगययमसासत्यववावरुव ॥ २५ ॥ वाहायिस
 दात्रथस्यथनेवः व्याधीसद्विगाकगासी ॥ गृह्णायनायिववयार्थिप्रदामसात्रथनामयववाजा ॥ मदिपीवज्रासीव ॥ १०५ ॥
 वमायदवीहमसायसादसथमेगीयारुग ॥ मसादवेज्रासीयथवाजयुगामरुमावरुहीवकमावरुग ॥ व्याधीमरु
 रुमसायजायमीः व्याधीसगावक ॥ अमारिकवशादयासगाविद्यनिवासी ॥ अथसात्राजामसादवीवद्विधकनमयनि

दवर्ग ४६ योः सद्योरत्रमान्यवमयमदगाऊनकार्यनसार्धयुगस्यभवात्रयजीकृत्वाअस्मिपदइगस्यमसासत्यसंभ
 अत्रात्रायगिवापिगाशंअयंसफत्रत्मयसुप ॥ अयुगनयमसासत्यनः ॥ अस्यव्याधीजालरावपविद्यके ॥ नवप्रपययनि
 अनेकवजयादगे ॥ ४७ ॥ मसायमवीवस्यपविदभनाइनाग ॥ निगजसमयिकाके ॥ केत्य ॥ अरिवसायनीद्वधकार्यवका
 विगा ॥ अस्मिन्मनिदभमान ॥ अयुमयानीसत्यानामदवमानविकाया ॥ यजायाअनरुवायीसस्यकसीयोधोविक्रमत्यादि
 नी ॥ अयिवदगुवयययय ॥ अस्यसुयस्यदनिदभनगाया ॥ संयसुणाव ॥ अविद्याननः ॥ योवान् ॥ अनमनूपाफ ॥ ४८ ॥ ॥
 सवसुयराशोकमसयुनुवाजा ॥ व्याधीयविवकानामनविभगिगम ॥ १२ ॥ अथसल्लगानिअनकानिवाधिसत्वभक्त

॥ समाधि यन सवर्ग वला कवक कटसु अगग रु नाय सी काना कृदय सी कथय गयः सवर्ग वला कवक कटसु अगग रु पा
 दो नि प्रसा वन्दि त्वा न काने रिगानि कानि काना उहिरु गानि गीः सवर्ग वला कवक कटसु अगग रु मरि रु विम
 ॥ सवर्ग वला कवक कटसु अगग रु मरि रु विम ॥ सवर्ग वला कवक कटसु अगग रु मरि रु विम ॥ सवर्ग वला कवक कटसु अगग रु मरि रु विम ॥
 कहे ल कृतः स विमलः स विमलः स विमलः स विमलः स विमलः स विमलः स विमलः स विमलः स विमलः स विमलः ॥ १०५ ॥
 यावत्तन्त्रः स विमलः स विमलः स विमलः स विमलः स विमलः स विमलः स विमलः स विमलः स विमलः स विमलः ॥
 सवर्ग वला कवक कटसु अगग रु मरि रु विम ॥ सवर्ग वला कवक कटसु अगग रु मरि रु विम ॥ सवर्ग वला कवक कटसु अगग रु मरि रु विम ॥

[illegible]

द्वायद्वमनर्कं जसं प्रहा प्रहासागवमवकुर्त्तु ॥ प्रहा प्रहा द्वायद्वमननकमवर्तः प्रहा प्रहा द्वायद्वमनमिवागिरत्तु ॥
 जहा प्रहा का द्वायद्वमननकमवर्तः प्रहा प्रहा द्वायद्वमननकमवर्तः प्रहा प्रहा द्वायद्वमननकमवर्तः प्रहा प्रहा द्वायद्वमननकमवर्तः ॥ सर्ववसुतामननकमवर्तः ॥
 नमव ॥ प्रहा प्रहा द्वायद्वमननकमवर्तः प्रहा प्रहा द्वायद्वमननकमवर्तः प्रहा प्रहा द्वायद्वमननकमवर्तः प्रहा प्रहा द्वायद्वमननकमवर्तः ॥
 गाय ॥ प्रहा प्रहा द्वायद्वमननकमवर्तः प्रहा प्रहा द्वायद्वमननकमवर्तः प्रहा प्रहा द्वायद्वमननकमवर्तः प्रहा प्रहा द्वायद्वमननकमवर्तः ॥
 मनज्जुविद्यम ॥ निष्प्रवनिष्प्रवजिर्नम द्वायद्वमननकमवर्तः प्रहा प्रहा द्वायद्वमननकमवर्तः प्रहा प्रहा द्वायद्वमननकमवर्तः प्रहा प्रहा द्वायद्वमननकमवर्तः ॥
 यज्जुवद्वमननकमवर्तः प्रहा प्रहा द्वायद्वमननकमवर्तः प्रहा प्रहा द्वायद्वमननकमवर्तः प्रहा प्रहा द्वायद्वमननकमवर्तः ॥

[illegible]

102

150

150

